मानव मन्दिर

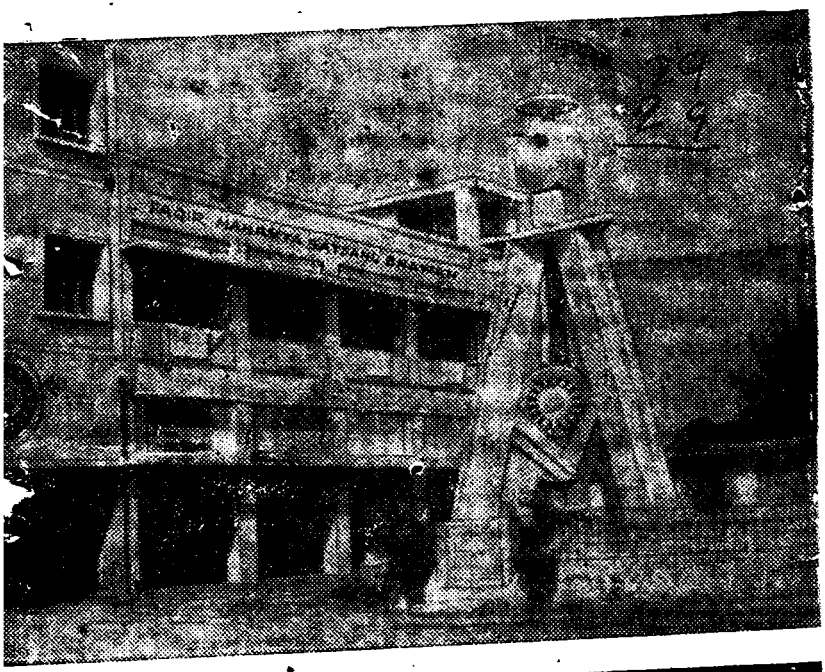

फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट
सुतेहरी रोड, होशियारपुर
द्वारा अमूल्य भेंट
संस्थापकः परम संत परम दयाल
पं. फकीर चन्द जी महाराज

FORM I

(See Rule 8)

Place of Publication	Hoshiarpur
Date of Publication	10th of every month
Periodicity of Publication	Monthly
Printer's Name	Dr. Paras Ram Aggarwal
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir. Hoshiarpur.
Editor's Neme	Dr. Paras Ram Aggarwal
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Sutehri Road, Hoshiarpur.
lame and address of individuals, who own the lanav Mandir of partners of shareholders, olding more than one ercent of the total apital	- Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

I, Dr. Paras Ram Aggarwal hereby declare that the rticulars given above are true to the best of my owledge and belief.

ated :

Signature of Publisher

Printed and Published by : Dr. Paras Ram at Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir Hoshiarpur, for the Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

Param Sant Param Dayal Pt. Faqir Chand Ji Maharaj

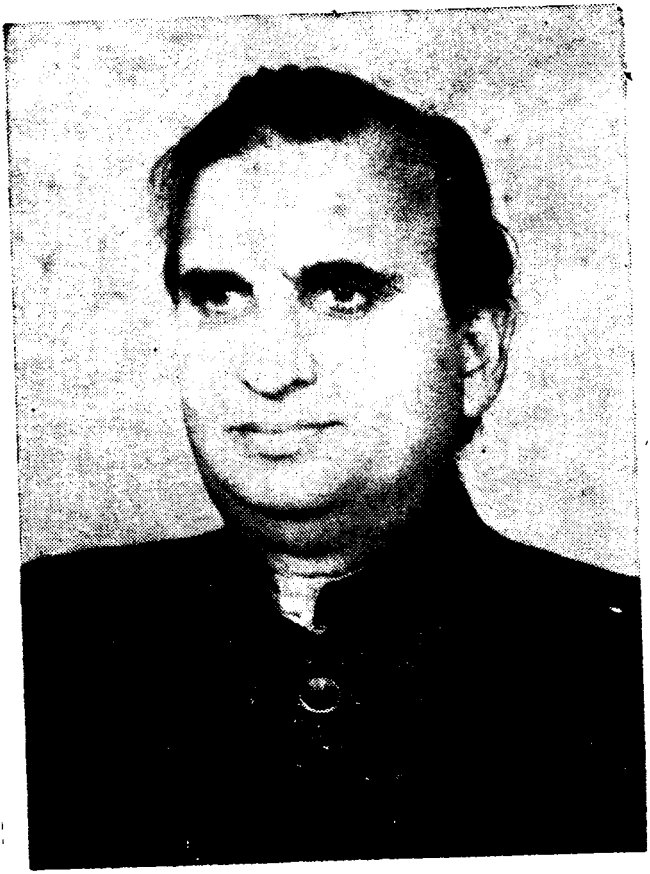

Param Sant Manav Dayal Dr. I. C. Sharma Ji Maharaj

मासिक—

मानव मन्दिर

विश्व में मानव मात्र के सामाजिक सांस्कृतिक
और आध्यात्मिक कल्याण और विकास की
सेवा में संलग्न मासिक पत्र।

सम्पादक :
डा० परस राम अग्रवाल

वर्ष 14	वीरवार 10 मार्च 1988	संख्या 11

सत्संग हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज

(गतांक फरबरी 88 पृष्ठ 14 से आगे)

"मैं क्या हूँ ? कौन हूँ ? कैसा हूँ ? मुझे अपनी खबर है। आपको मेरी खबर नहीं है । क्यों नहीं है ? क्योंकि बावजूद देवता और योगी होने के आपको अपनी तवज्जह नहीं है, मेरी खबर क्या होगी।"

पढ़ के लिख के खो गये और जात को जाना नहीं।
वो नहीं आलिम है जिसने खुद को पहचाना नहीं ।
पढ़के पत्थर बन गये लिख - २ के गारा ईंट हो ।
क्या खुदा को मानोगे जब अपने को माना नहीं ।
इलम बेअमली है और ये अकल बेअकली हुई ।
खाली इलम वा अमल हो नादान हो दाना नहीं।

मैं क्या हूँ ? आप क्या समझते हैं ? आप कहेंगे मैं गणेश जी का चूहा हूँ, यह सही है और सच है। गणेश जी क्या हैं और गणेश जी का चूहा क्या है ? यह आप नहीं जानते ? मुझे चूहा कह और चूहा समझ कर अपना गला छुड़ाते हैं।

गणेश जी कहते हैं गुणों के ईश को, गण नाम है इन्द्रियों का और जो उसका ईश नाम है मालिक का ईश्वर का और

खुदा का जो साहवे हवास है, इन्द्रियों का मालिक है जिसके सहारे सारी इन्द्रियाँ रहती हैं वो गणेश है। इन्द्रियाँ देवता कहलाती हैं। गणेश जी देवताओं के मालिक हैं, यह आप किसी कदर समझ गये। तमाम जिस्मानी (शारीरिक) निजाम जिसके आधार और सहारे पर है वो गणेश कहलाता है। वो इसी वजह से सबका मुकद्दम, सबका पेश अमाम और सबका पेशवा है। कहते हो "श्री गणेशाय नमः" और समझते खाक भी नहीं :—

अकल पर पत्थर पड़े हैं, अकल रुख्सत हो गई,
अकल थी बरकत की जड़, लेकिन वो जहमत हो गई।

जाहिरी बातों में अटके बेखबर बातिन से हो,
हाय ये जाहिर परस्ती दिल की जहमत हो गई।

गणेश का इलम इस मौके पर इतना ही देना मकसूद है वर्ना तवालत होगी, जब और पूछोगे तब देखा जायगा।

और मैं क्या हूँ? चूहा। जिस पर गणेश सवारी करते हैं और जिस पर तमाम इन्द्रियों और तमाम इलम वा अकल का बोझ लदा हुआ है। मैं गणेश जी का वाहन कहलाता हूँ वाहन का उर्दू तर्जुमा सवारी है और संस्कृत में भी सवारी को कहते हैं। मैं पेखतन गणेश का घोड़ा हूँ। सबकसार, तेज रफ्तार, खुशखराम, बेरकाब और बेलगाम :—

जमीन पर हूं कभी आसमान पर हूं कभी,
कभी हूं कौन मैं और मैं मकान पर हूं कभी।
इधर फुदक के गया और उधर को जा उछला,
कभी हूं नाम के सिर पर निशान पर हूं कभी।
हवायें तेज हों मुझमें हिरन की शोखी,
कभी हूं ज़ेरे ज़मीं आसमान पर हूं कभी।

मैं सब को अपनी पीठ पर लादे हुए फिरता हूँ मैं न होता तो न जमीन होती, न आसमान होता। न शिव होते, न पार्वती, न गणेश।

देखने में तुम समझते हो हकीर,
असल में मैं हूँ यहाँ मर्दे कबीर।

भूत, बेताल हैरत में आकर पूछने लगे। चूहा जी महाराज ! तुम कौन हो जो इस तरह बढ़ - २ कर बातें कर रहे हो ?

चूहे न कहा। तुमने पूछा अच्छा किया। अब मैं तुम्हें बखुशी अपना राज़ बताऊंगा। मैं गणेश जी का दिल हूँ। चुलबुला ! शोख ! मनचला। यह दिल तुमको भी हासिल है। तुम नहीं समझते। विष्णु का दिल गरुड़, ब्रह्मा का दिल हंस है, शिव का दिल बैल, पार्वती का दिल शेर, सरस्वती का दिल मोर, लक्ष्मी का दिल कमल। इस दिल के हजारों नाम और सूरतें हैं :—

किसी का दिल है अगर बद किसी का दिल है नेक।
किसी का दिल हुआ सदगों किसी का दिल हुआ एक॥

तुम समझते होंगे, तुम पाँवों के बल चलते, हाथ से छूते-पकड़ते, जवान से बोलते, नाक से सूंघते, अकल से और जिस्म से काम करते हो। यह गलत है। सबका बोझ अपने ऊपर लादने वाला, सबका काम करने वाला, सबको काम में लगाने वाला यह तुम्हारा दिल ही है :—

वही आँख में है वही नाक में है,
वही अर्श पर है वही खाक में है।
वही रण में हर दम समाया हुआ है,
वही जाता है और आया हुआ है।

उसी में है ताकत उसी में है कुव्वत,
उसी में है नफरत उसी में है रगवत।
उसी में मुहब्बत उसी में मदारा,
वही मखफी है और वही आशकारा।
निजाम जहाँ का वहीं मुन्तजिम है,
जो सच पूछो दिल मन्तनिम मोतरम है।

अब तुम समझ गये कि यह दिल क्या है? यह चूहा है चुलबुला, हर वक्त अठखेलियाँ खेलने वाला। वो महदूद और गैर महदूद दोनों है और वही हर दो आलम का असली जौहर है। अगर वह ऐसा न होता तो गणेश जी इनके जिस्म और तन का बोझ कैसे उठाये फिरते! मैं गणेश जी की सवारी का चूहा, शिवजी का बैल, ब्रह्मा का हंस, पार्वती का शेर, विष्णु का गरुड़ और तुम सबका दिल हूँ। एक मतनफस या प्राणी, प्राणधारी नहीं हैं जिसकी रूह और जान में मैं नहीं हूँ :—

जर्रा जर्रा में भी मेरी शान है, कतरा कतरा में मेरी जान है,
मैं महीद हर दो आलम हो गया,
मुझसे जो खाली हुआ वो मर गया।

अब तुमने समझ लिया मैं क्या चीज हूँ। अब और पूछो तो जवाब दूँ।

भूत और बेताल ने सवाल किया—"ऐ चूहे! अगर तू दुनिया का दिल है तो तेरे ओसाफ (फायदे) क्या हैं?"

चूहा बोला—"दुनिया में जितने ओसाफ हैं सब मेरे ही हैं। मैं किस - २ का शुमार करके तुमको बताऊँ। एक, दो हों तो इनकी गिनती गिनाऊँ जिससे गिनती निकली। पद्म, नील, शंख, महाशंख तक जाती है उसके हिसाब-किताब का सामान कहाँ मिलेगा!

मेरे ही ओसाफ सब ओसाफ हैं,
वो कभी मैले कभी वो साफ हैं।
जो हैं खुश ओसाफ वो है जात पाक,
जो हैं बद ओसाफ इनको समझ खाक।
अर्श पर चढ़ कर मैं हूँ कुर्सीनशीन,
फर्श पर आया तो बिस्तर है जमीन।
मैं ही तख्त व वस्त हूँ और फौक हूँ,
मैं ही सबका जौक हूँ और शौक हूँ।
हो के मुर्शिद कर रहा हूँ रहवरी,
मुझमें है फज़ल व कर्म की बरतरी।
दिल गुजरमा खुदाये दो जहाँ,
चोटी से एड़ी तलक होकर महीद।
मैं ही हूं महद्दद और मैं हूं बसीद,
सरबरे आलम हूं फकरे दो जहाँ।
मुझमें कायम हैं जमीनो आसमाँ,
दिल में ही रहते हैं सब कौन बमकाँ।
खिल्द व जन्नत हैं मेरे हुस्न वाजमाल,
नार दोजख जो है वह मेरा जलाल।
मेरे ही दोनों हैं जलाल वा जमाल,
मुझ में रहते हैं सब कमाल वा कमाल।

यह तुमने सुन लिया। मुख्तसर मैं तुम्हारे जेहननशीन करना चाहता हूँ कि मेरे पाँच मकसूस ओसाफ क्या हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार।

काम (शहवत) तरक्की, बेहतरी, तौलीद व तनासल, बालीदगी फैलाव और बढ़ने का जजबा है।

क्रोध (गुस्सा), एहतियाद, खुददारी, खुदज़न्ती और अपनी शान कायम रखने का जजबा है।

लोभ (लालच), दौलत, अश्मत, इज्जत, सरबत और इख्तदार हासिल करने का जजबा है।

मोह (तअल्लक), बातल्लकी, बाऔलादी, बाइमाली, बाबस्तगी वगैरह का जजबा है।

अहंकार (इस्तकलाल, अना), अपनी असलियत पर जम कर रहना, अपनी जगह से न टलने का जजबा है।

ऐ देवताओ ! ये मेरे ज़ाती ओसाफ हैं। ये कुदरती अतियात हैं जो मुझे हासिल हैं। इनके जायज़ (ठीक) इस्तेमाल से इन्सान नुक्तारस, खुदारस, हकीकत में और असलियत में रस होता है। इनके नाजायज इस्तेमाल से वो रज़ील, हकीर, बेआबरू, कमजर्फ और बेहुर्मत बन जाता है जो इन कुदरती अतियात की कदर करता और इनकी कदर करना जानता है वो इन्सान है अशरफ अल मखलूकात और अकमलअल कायनात और अजमल अलमोजूदात है। जो इनकी बेकदरी करता है वो कभी इन्सान नहीं बल्कि बदतर अज़ हैवान है। अरजल अलमखलूकात, असफल अलमोजूदात और पैकरउल कायनात है। जिसने इनकी कदर की, मुझे समझा फिर उसे और किसी बात के समझने की जरूरत नहीं बाकी रही। जिसने मुझे जान लिया उसने सब कुछ जान लिया। जिसने मुझे नहीं जाना उसका तमाम इलम व हुनर, अकल व फन नकारा है। वो जानता हुआ अनजान और दाना कहलाता हुआ सख्त नादान है।

जो लोग रात-दिन कहा करते हैं दिल पर काबू रखो, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को मार दो, कौन मुझ पर काबू पाता है ! जो मुझे काबू में लाना चाहेगा और दुश्मनी करेगा मैं उसे ऐसी पटकनियाँ दूंगा कि चारों शाने चित होकर गिरेगा। और किसी आसमानी या जीनी

ताकत के संभाले न संभलेगा, मुझसे जो दोस्ती करेगा वह बेशक हर बात में कामयाब रहेगा :—

और जो काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को मारने चलेगा, आप मिट्टी में मिलेगा । क्योंकि जिन पाँच सुतूनों (खम्बों) पर जिन्दगी की मरतफह इमारत कायम की गई है वही ये हैं, ये न हों तो फिर ज़िन्दगी कैसी ! वाफह उलाहना खुदकश है । राफहहुल शहवत तनज्जली की खन्दक में गिरता है । तमा का दुश्मन मुफलस (गरीबी) और नादार (निकम्मा) बना फिरता है । बातअल्लुकी से नफरत करने वाला बेकसी और बेबसी की ठोकरें खाता फिरता है । और जिसने अपनी खुदी के साथ दुश्मनी मोल ली वो खुदाई का दुश्मन हो गया, खुदा को वह क्या पायेगा गोजशतर की तरह न वो जमीन का रहा न आसमान का :-

हटा दोनों जहाँ के काम से वो,
न इधर का रहा न उधर का रहा ।
क्या गुजरा निशान से नाम से वो,
न इधर का रहा न उधर का रहा ।
नहीं दीन न दुनिया की उसको खबर,
नहीं जानता पानों के सिरे किधर ।
फँसा जहल में दलदल के वो वशर,
न इधर का रहा न उधर का रहा ।

अगर किसी को कुछ करना-धरना है तो सिर्फ इस कदर कि तादीब दिल, तरवीयत दिल, असलाद कल्ब और सफाये फातन के ख्याल में लगे फिर वो अपनी खोई अजमत और शराफत को हासिल करेगा । लेकिन उसके लिए मुर्शिद कामिल की सोहबत और बरकत लाजमी शर्त है ।

"साहिबान मेरा लेक्चर हो चुका। अगर शिवजी का हुकम है तो मैं दिन-रात तकरीर कर सकता हूँ वरना समझने बूझने और समझाने-बुझाने के लिए इतना ही काफी है।"

शिव जी बोले—"बस, ऐ चूहे तेरा लेक्चर निहायत मुअस्सर, मुक्तसर, पुरमजमून और मौका महाल के मुनासिब था।"

भूत, बेताल ने यकजबान होकर शोर मचाया। 'गणेश जी के चूहे ने अभी तक अपनी सरगश्त नहीं सुनाई। वो मुमकिनन ज्यादा नसीहत आमोज और नतीजा खेज साबित होगी।'

शिव जी ने कहा, 'रात को वह अपनी रामकहानी सुनायेगा। इस वक्त इसी कदर काफी है।' और हाजरीन सामयीन अपने - २ कयामगाह पर चले गये।

卐 शिव जी का रक्स वा सरूर 卐

दिन गया रात आई। शिव भगवान बाघम्बर बिछा कर सिद्धासन पर बैठे। गणेश जी और पार्वती महारानी उनके दायें - बायें रौनकबख्श हुए। शिवजी महाराज का दूसरा नाम चन्द्रमौलि है। इनकी पेशानी के दर्म्यानी हिस्से में चाँद रोशन रहता है। हर जगह अन्धेरा और उजाला पक्ष पन्द्रह - २ दिन के होते हैं। जहाँ उजाले और अन्धेरे पक्ष की रिआयत नहीं है, हर रोज या आँके हर रात में चाँदनी रहती है।

चाँद पेशानी पर चमकता है, रात को पाके वो दमकता है,
नूर का जलवा जलवागर है वहाँ,
नूर वातन का गोया गर है वहाँ।

सारा कैलाश जगमगा उठा। भूत और बेताल आये नाचा, गाया, बजाया शिव जी मस्त होकर नाच उठे, खूब डमरू बजाया, त्रिशूल में एक आईनी छल्ला पड़ा था। जब उसे चक्कर देते थे, खड़ताल की सदा वर अमाद होती थी और उनकी रागिनी भी खास तरह की थी।

अखण्डमनन्तमखिलविश्वरूपम्,
अनादिमलखगुणसगुणजगद्भूपम् ।
निराकारसाकार माकाररहितम्,
न एति न नेति न जगजीवसहितम् ॥
शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥
महाकाल विकराल अमृत अकाली,
नासङ्गमष्टाङ्गमगोचरं कपाली ।
अगं व्यापकमवेद्यमनूपम्,
अहं सर्वदाज्ञानभण्डारकोपम् ॥
शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहम् ।
रयिप्राणमङ्गलोऽहं शुक्रकर्त्ता,
अहं बृद्धवक्ता अहं वेदभर्ता ।
अहं वाचलक्षमहं ज्ञानध्यानं,
अहमिन्द्रियं भावभक्तं प्रमाणम् ।
शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥

हजरत के जिस्म पर कोई लिवास नहीं था। बाघम्बर चिदम्बर नंगधड़ग। बड़ की जड़ों की तरह सिर की जटाएँ खुली हुई। बदन पर श्मशानभूमि की राख मली हुई। त्याग, वैराग्य की अजीवोगरीब मूरत। हाथ में कासए सिर था भंग के अर्क से भरा हुआ। जब इस पर ध्यान जाता था अफीमचियों की तरह चुस्की लगाकर दो-चार घूंट गटगट पी जाते थे। सिर की चोटी से गंगा बह रही थी और जब-२

नाचते, बजाते और गाते हुए वो चक्कर लगाते थे, इस गंगा की मतहूद धारों से फव्वारे छूटते थे और इन पर चाँद का अक्स पड़ कर कौस कजा (इन्द्र-धनुष) के अलग-२ रंगों का नजारा पेश करता था । गणेश जी मौन बैठे हुए थे लेकिन पार्वती अपने पति के रक्स की खुश अदाई को देख-देख कर मुस्करा रही थी ।

शिव हसीनों में हसीन और नाज में नाज आफरीन,
राज़े कुदरत की मुजस्सम शक ं में राज़ आफरीन ।
बेनियाजी का था जलबा जलबा था साजा आफरीन,
आफरीन वर स्वरश्त सद आफरीन बाज आफरीन ।

तन की उर्यानी से बेहतर क्या है दुनिया का लिबास,
जो है नंगा हुस्न का जेवर है सारा उसके पास ।

शिव जी की नजर पार्वती जी की मुस्कराहट पर गई । रुक गये । नाच, राग बन्द हो गया । आसन मारकर बैठे । योगिनी, डाकिनी, शाकिनी भी सब खामोश हो गई ।

शिव जी ने पार्वती से पूछा, तू हंसती और मुस्कराती क्यों है ?

पार्वती बोली, "सब आये थे गणेश के चूहे की कहानी सुनने और आपके रक्स व सरूर की खुशी में न सिर्फ अपने आपको बल्कि अपने इरादे और अपनी नीयत के ख्याल को भी छोड़ बैठे ।"

शिव जी, "हाँ ! बात तो सच्ची है ! लेकिन मैं क्या करूँ ? यह इनका कसूर नहीं है । जब मैं खुद भूल गया तो फिर मेरी दुनिया क्यों न अपने आप को भूले ।

जब खुदा अपने में गुम है, गुम खुदाई हो गई ।
जब खुशी में मस्त, मस्ती खुश आयाई हो गई ॥

हाँ ! चूहे साहिब ! अब जरा मेरे सामने आ जाओ । मुन्तजिर हैं। अपनी रामकहानी चटपट छेड़ दो। ा बहुत गई। यह तुम्हारी सरगश्त सुनकर तब सोने ेंगे।

चूहा सामने आया। सिर और दुम हिला कर आदाब ा लाया और अपना किस्सा इस तरह पर शुरू किया"।

(क्रमशः . . .)

सत्संग परमसन्त परम दयाल
पं० फकीर चन्द जी महाराज

(सलवान हाईस्कूल, नई दिल्ली 30-9-71 प्रातः)

मंगलम् गुरु शब्द रूप अनाम नाम प्रकाशनम् ।
मंगलम् शब्दार्थ शब्द आधार शब्द निवासनम् ।।

यह गुरु की स्तुति है, जो अपना वचन कहता है और जीव को विश्वास करा देता है कि तू कहाँ से आया हुआ है ? कहाँ बैठा है और कहाँ को जाना है ? जीवों को वास्तव में पता नहीं है। वह माया, काल में फँसे हुए हैं। तुम सभी लोग वहाँ से आये हुये हो जहाँ से सद्गुरु जीवों को उनके घर का पता देता है।

मुझे तो उस घर का पता नहीं लगता था। दाता दयाल जी ने बहुतेरा समझाया-बुझाया। अन्ततोगत्वा यह गुरुआई का काम मुझे सौंप दिया। इस क्रम में मुझे यह ज्ञात हुआ कि मेरा रूप श्रद्धालुओं को उनके सपने में, उनके अभ्यास में तथा जाग्रत अवस्था में सहायता करता रहता है। वास्तव में मैं इन घटनाओं से अनभिज्ञ होता हूँ। मैं विचार करने को वाध्य हो गया कि सच्चाई क्या है ? मैं बात को समझ गया हूँ और मैंने सच्चाई का ही भाषण दिया है। अन्यों ने सच्चाई नहीं बतलाई है। एक दृष्टि से वह ठीक हैं जैसा कि तुम लोग सांसारिक इच्छाएँ लेकर आते हो न

; अपने घर जाने के विचार से। अतः यह भी एक कारण
' सकता है कि दूसरों ने इसी से संसार के सामने सत्य
र्शित नहीं किया।

जिसको जो प्राप्त होता है, वह अपने ही विश्वास का
न होता है। यह स्मरण रखो कि कोई महात्मा किसी को
छ नहीं देता है। यदि कोई गुरु किसी को कुछ दे सकता
तो वह सच्चा ज्ञान दे सकता है। वह भी तब जब वह
ाके पास हो। आम तौर पर गुरुओं ने जीवों को अपनी
य का साधन बना रखा है क्योंकि यह जगत् द्वंद्व का स्थान
। यहाँ सबको अपनी-२ पड़ी हुई है।

मैंने इस संसार में अपने आपको सन्त सद्गुरु वक्त कहा
। यह बात निर्भय होकर कहता हूँ। सद्गुरु नाम है सच्चे
न का और सच्चे भेद का। आजकल क्या हो रहा है?
सी के अन्दर बाबा फकीर प्रकट होता है तो वह कह देता
के हाँ होता है। यह बात ख्याति को प्राप्त होती है और
ने वाले इसी को तूल देकर लूट-मार प्रारम्भ कर देते हैं।
चाई तो यह है कि किसी जिज्ञासु के अन्दर गुरु का प्रकट
ा उसके अपने मन का खेल है। मैं अपने वचनों से इस
त्य को खोल देता हूँ ताकि लोग भटकने से बच जावें।

नाम क्या है? सबसे पहले अनाम था। इसका मुझे
' हो गया है। दाता दयाल जी महाराज ने मुझे ज्ञान देने
लए गुरु पदवी दे दी ताकि मैं इस ज्ञान को प्राप्त कर
जो कि वह देना चाहते थे। उन्होंने मुझे गुरु पद देते
र कहा था—फकीर तुझे राधास्वामी दयाल के दर्शन
गियों के रूप में होंगे। ऐसा ही हुआ। मुझे दर्शन प्राप्त
ये।

कई लोग कहते हैं कि अन्तर में प्रदर्शन होता है वह किसी हद तक ठीक है। अगर अभ्यासी का हृदय शुद्ध है तो उसे अपने अन्तर में ठीक से रहनुमाई प्राप्त होगी। यदि मन गन्दा है तो वह गुमराह कर दिया जायगा।

मैं तुम्हें ज्ञान देने के लिये प्रकट हुआ हूं और तुम लोगों से कहता हूं कि तुम लोग अपने मन के चक्कर में कभी न आना। यह मन तुमको बहका देगा। कहीं का भी न रहने देगा।

आजकल झूठे गुरु अनेक निकलते हैं। वे तुमको लूटना चाहते हैं। मैं राधास्वामी धाम गया। एक व्यक्ति ने मुझे बतलाया कि गोपीगंज जो वहाँ से चार मील है, वहाँ एक व्यक्ति गुरु बन कर सत्संग करवाता है। वह कहता है तन, मन, और धन इसके हवाले कर दो। वह तुमको सतलोक पहुंचा देगा। इसने दो तीन दिन सत्संग करवाया। एक भोली भाली औरत उसके चक्कर में आ गई। उसने गहने तथा कपड़े उस महात्मा के आगे रख दिये तथा कहा कि महाराज मुझे सतलोक पहुंचा दीजिये। उसने जेवर और रुपया ले लिया और यह भी कहा कि अब तेरा मन मेरा मन हो गया है और उसके साथ भोग किया। अगले दिन वह महात्मा वहाँ से भाग गया। ये हैं आजकल के नकली महात्मा लोग। मेरी बहनो और बेटियो ! तुम लोग क्यों गुरुओं के पीछे पीछे मारी-मारी फिरती हो। जरा आँखें खोलो। कोई स्त्री किसी साधु के पाँव न दबाये। प्रत्येक स्थान पर धोखा पाखंड व छल है।

हर किसी को अपनी श्रद्धा व विश्वास का फल मिलता है। कोई गुरु या महात्मा किसी को कुछ नहीं दे सकता है। मैं चाहता हूँ कि मेरे सत्संग के प्रवचन आम लोगों के सामने

आवें जिससे उन्हें पता तो चले कि गुरुइज्म में कितना अन्धेर मचा हुआ है। परमसन्त कबीर साहिब ने कहा है :—

भाड़ पड़ै यह देश विराना ।
भव सागर अगम अथाह, भक्त अभक्त सबन ले बूढ़े कोई न पावै थाह।
भक्षक आप लीला विस्तारी, कला अनन्त दिखावै।
भक्षक को रक्षक कर जानें, चीन्ह न कोई पावै ॥
भजे ताहि सो भक्षक जानो, रक्षक रहा निहार।
भरम चक्र में पड़े जीव, लखै न शब्द हमार ॥

परमसन्त कबीर साहिब कहते हैं—यह देश बेगाना देश है। इसे आग लग जाय। इस दुनिया ने भक्षक को रक्षक जाना हुआ है। तुम्हारा मन ही तुम्हारी रक्षा करने वाला है। यही मन बुराई उत्पन्न करने वाला है। इस मन में सतत संकल्प उठते रहते हैं। जो मन रक्षा करता है वह (गुमराह) पथभ्रष्ट भी करने वाला है। गुरु रक्षा और है। अन्तर में उत्पन्न होने वाले दृश्य आदि तुम्हारा अपना ही मन उत्पन्न करता है। मेरे जिम्मे यह ड्यूटी है।

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा।
दुखी जीव को अंग लगाकर, ले जा गुरु के देसा ॥
तीन ताप से जीव दुःखी हैं; निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी ॥

मैं वह नाम नहीं देता जो और लोग देते हैं। वह स्त्रियों को बन्द कमरे में ले ज कर पर्दे में चर्चा करते हैं। कई बार वहाँ बिजली बुझा देते हैं। कहते हैं कि कानों में उँगली देकर शब्द को सुनो या नूर को देखो। हो सकता है कुछ महात्मा अच्छे भी होते होंगे किन्तु अधिकतर बद और लूट-मार करने वाले देखे गये हैं।

एक रोमांचकारी घटना सुनाता हूं; कुछ दिन हुए एक मर्द व उसकी पत्नी मेरे पास होशियारपुर आये। मर्द बोला मेरी पत्नी को भूत तंग करता है। मैंने दोनों को बहुत ध्यान से देखा और उनसे पूछा मुझे क्या समझ कर आये हो? वह बोले सन्त समझ कर। मैंने उससे पूछा तू सच सच बता क्या नपुंसक नहीं है। वह बोला हाँ मैं नामर्द हूं। कितने वर्ष विवाह हुए हो गये? वह बोला सात वर्ष। मैंने उस स्त्री से पूछा, उस महात्मा ने जिसका तुम दोनों सत्संग करते हो तुम्हारा सत नहीं लिया है? वह डर कर काँप उठी, उसने काम का सुख पहले नहीं चखा था। इस कारण उसके मस्तक पर प्रभाव हो गया था। मैंने उन्हें कहा कोई भूत अब नहीं आयेगा। यह है महात्माओं का सत्संग जो आजकल देखने में आ रहा है।

मैं जो वचन कहता हूं वही है सच्चा नाम। मैं पाखंड नहीं जानता। न मैं जीवों को लूटता ही हूं और न जीवों के साथ अनुचित व्यवहार ही करता हूं। मेरा काम दया का है। प्राय: लोग कहा करते हैं, गुरु, चेलों की सुरतें चढ़ाते हैं। मगर उन लोगों की सुरतें चढ़ती है जिनमें श्रद्धा और विश्वास का जमीर रहता है। पिछले दशहरा सत्संग पर दिल्ली में एक बख्तावर सिंह नामक व्यक्ति सत्संग सुनने को आया था। वह दिल्ली में साइकिलों का काम करता है। दो महीने के पश्चात होशियारपुर भी आया। उसने मुझ से कहा कि मैंने दिल्ली में आपके वचन सुने। उनका मुझ पर यही असर हुआ कि मेरे अन्दर में प्रकाश प्रकट हो गया और शब्द सुनाई देने लगा। तात्पर्य यह कि उसने मुझे कुछ रुपये भेंट किये। मैंने अपने दिल से पूछा—क्या तू इस व्यक्ति को जानता है और क्या तूने वास्तव में इसकी सुरत

चढ़ाई है जैसा कि यह बयान करता है। मेरे अन्तर से उत्तर मिला 'नहीं' इसकी अपनी भावना अथवा अधिकार के कारण से इसकी वृत्ति ध्यान में लग गई है। इसका शब्द भी खुल गया है और प्रकाश भी होने लगा है। यदि यह कहा जाय कि यह सब मेरे कारण से ही हुआ है तो कदापि सत्य नहीं है। यही दूसरे सन्तों के विषय में भी समझा जा सकता है।

लोग तो आजकल गुरुओं का ढिंढोरा पिटवाते फिरते हैं। कहते रहते हैं कि अमुक गुरु तुम्हारी सुरत चढ़ा देगा। ये बात असत्य व झूठ है। आप लोगों ने यहाँ लंगर पर दो-ढाई हजार रुपया व्यय कर दिया है। अच्छा होता कि मेरे विचारों का प्रचार ही करते।

हमारी भोलीभाली बेटियों का और बहनों का सत लिया जा रहा है अज्ञानियों से रुपया बटोरा जा रहा है। हर तरफ लूटमार हो रही है। नादान जीवों के पैसों से डेरे तथा मन्दिर बनाये जा रहे हैं। ये हैं महात्माओं की करतूतें।

मैं यह बातें खोल खोल कर क्यों बताता रहता हूं। इस लिए कि मुझे गुरुदेव की आज्ञा है कि निबल, अबल, अज्ञानी जीवों की सहायता करूँ। मैं गुरु के बड़प्पन तथा भाव को समझता हूं। मैं 'नाम' पर प्रकाश डाल रहा हूं। वह एक तत्व है उसमें हरकत होने से सारी सृष्टि का स्वरूप बना है। यदि कोई मनुष्य यह समझता है कि मेरी शिक्षा से लोग लाभान्वित होंगे तो इसके फ़ैलाने में अवश्य सहायता करनी चाहिये। मुझे नाम का ज्ञान आप लोगों से हुआ है। जब से यह पता चला है कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता तब से प्रकाश व शब्द में जाने लगा हूं और अपने आपको पहचानने को बाध्य हो गया हूं। मैं प्रकाश को देखता हूं

और सोचता हूं कि कौन सी वस्तु प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। इसी सम्बन्ध में पता चलता है तथा अनुभव होता है कि वह है एक तत्त्व, जो परमतत्त्व से प्रकट हुआ है। उसमें गति होने से सुरत में प्रकाश व शब्द प्रकट होते हैं। बाद में रचना हुई।

मैं यह कहता हूं कि ऐ मानव ! तेरा मन ही तेरा रक्षक है यही तेरा भक्षक भी है, (काल भी है)। मैं अपनी ही वासना का फल पाता हूं किन्तु समझा जाता है कि कोई दूसरा व्यक्ति मेरी रक्षा करता है। नहीं यह बात नहीं है। मैं तो सत्य भाषण ही करूंगा। मैं अपनी आत्मा को या अपनी चादर को स्वच्छ करके ले जाना चाहता हूं। मुझे इस का विश्वास भी है क्योंकि मैंने इस संसार में आकर किसी से फरेब नहीं किया। तुम निबल, अबल, अज्ञानी जीव हो। तुम सहारा मांगते हो तथा यह समझते हो कि कोई अन्य शक्ति तुम्हारी सहायता करती है। यह बात नहीं है बूंद के पास ही सारी समुद्र की शक्ति है। ऐसी स्थिति में शक्ति-हीनता का क्या प्रश्न है। तुम्हारा मन तुम्हारी सुरत को उलझाता है। तुम यह विश्वास करो कि तुम उस अकाल-पुरुष के अंश हो और उसके पुत्र हो। अब तुम इस मन में हो और इसे ही सच्चा समझते हो। मन को ही काल कहा गया है। यही मन कर्त्ता है। काल बुरा नहीं जब किसी श्रद्धालु व्यक्ति की सहायता होती है तो वह समझता है कि बाबा फकीर सहायता करने आ गया है। वास्तव में उसका मन ही वहाँ उस रूप में होता है। अन्धविश्वास से बाबा फकीर को भेंट की जाती हैं। 1942 में मैं हजूर महाराज बाबा सावन सिंह जी महाराज के पास ब्यास गया था। मैंने उनसे प्रार्थना की सत्संग का काम करना मेरे लिये कठिन है क्योंकि मुझको सत्य सत्य कहना है। वह कहने लगे फकीर !

अधिक लोग अधिकारी नहीं हैं। मैं डेरे के कारण अच्छी प्रकार काम नहीं कर सका। तुम निर्भय होकर काम करो मैं तुम्हारी पीठ पर बना रहूंगा—यही कारण था कि इसके पश्चात् मैंने दिल खोल कर सत्संग का काम किया है और स्पष्ट और साफ कहता हूँ कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता। और महात्मा लोग जाते होंगे। मैं यह जानता हूं कि मेरे समक्ष मेरी बातों का विरोध करने वाला कोई भी नहीं आता है। यदि मैं भूल-भरम में होऊँ तो कोई व्यक्ति या महात्मा कहे कि मैं गलती पर हूं। आज तक मेरी भूल बताने वाला मेरी दृष्टि में नहीं आया है। कठिनाई यह भी तो है कि सब लोग अन्दर ही अन्दर मेरी बात को स्वीकार करते हैं परन्तु स्पष्ट तथा प्रत्यक्ष स्वीकार नहीं करते कि वह भी किसी के अन्दर में नहीं जाते हैं। ऐसा कहने से आने वाली भेंट नहीं आ सकती है या उसमें कमी हो सकती है। यह डेरे वाले जिनके लाखों चेले हैं इसी से साफ बात कहने से दूर हटते रहते हैं।

एकान्त में, अकेले में ये गद्दी वाले मुझसे स्पष्ट कहते हैं कि वह भी किसी के अन्दर नहीं जाते हैं किन्तु सत्संगियों से ऐसा कहने में झिझकते हैं। यह स्थिति अनुभव करके मैं फकीर का रूप धारण करके आया हूं। मैं तो उनके लिये आया हूं जो वास्तविकता को जानना चाहते हैं तथा जो अपने घर वापिस जाना चाहते हैं। उन्हें चाहिए कि वह लोग दसवें द्वार से आगे जायें। हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज भी यही कहा करते थे। दसवें द्वार से आगे जाओ वहाँ सद्गुरु खड़े हैं। सभी लोग एक ही बात कहते हैं। कहने के ढंग में अन्तर है। मैं यह नहीं कहता कि दाता दयाल के चोला छोड़ जाने पर उनकी आत्मा मेरे अन्दर

प्रवेश कर गई है। यह तो पाखंड है। आगरे वाले यह कहते हैं कि गुरु मर गया और उसकी धार किसी में आ गई है। तुम अज्ञानी हो तुम्हारे हित के लिये ही सच्ची बातें कही जाती हैं, जिससे तुम पथभ्रष्ट न हो जाओ तथा लुट न जाओ। स्वामी जी महाराज अपनी वाणी में लिखते हैं।

कोई सुनो हमारी बात ।
कोई चलो हमारे साथ ॥

स्वामी जी महाराज की वाणी का तथ्य भी किसी ने समझा नहीं है। जो भी इसका अर्थ करता है वह उलट-पुलट करके करता है। सब लोगों ने हमारी आँखों में मिट्टी डाल रखी है। हम भी मिट्टी डलवाकर प्रसन्न होते हैं। स्वामी जी उसी वाणी में लिखते हैं :—

दया करें सतगुरु जब अपनी ।
पल पल राखें मुझको मोड़ा ॥
मैं अपने बल चढ़ूं न कबहूँ ।
जब लग मिलें न गुरु बन्दी छोड़ा ॥

जब तक किसी गुरु के बन्धन नहीं कटे हैं वह किसी को क्या आजादी दिला सकेगा या मुक्त कर देगा? तुमको कुछ प्राप्त करने के वास्ते गुरु के पास जाना है। तुम किसी वीतराग पुरुष के पास जाओ! वह अडोल गति में रहने वाला व्यक्ति ही तुम्हारी सहायता कर सकता है। तुम ऐसे व्यक्ति को अपने मस्तिष्क में स्थापित कर लो या उसका ध्यान करते रहो। मैं सौ प्रतिशत तो नहीं 90-95% वीतराग पुरुष हो चुका हूँ। जो लोग जिस भाव या विचार से मेरा ध्यान करते हैं उनको लाभ अवश्य पहुँच सकता है। लाभ पहुंचने का काम क्या मैं करता हूँ? नहीं कदापि नहीं।

मैंने तीन सत्संगों में नाम व अनाम की व्याख्या कर दी है कि कैसे तथा किस प्रकार मेरे अन्दर में सहज भाव से शब्द गूँजता है। गुरु के चरण प्रकाश ही हैं। तुम अपना इष्ट शब्द व प्रकाश बना रखो तभी लाभ होगा।

मेरी वाणी या वचनों को पकड़ने तथा समझने से तुम्हारा हित होगा। केवल मेरा ध्यान करने में तुम सतलोक नहीं पहुंच सकोगे। यह मिथ्या है कि अन्त समय में तुम्हें गुरु आकर ले जाता है। हाँ तुम्हारा मन अवश्य अनेक प्रकार के नाच नचाता है। राधास्वामी मत के संचालक राय साहिब सालिगराम जी महाराज अपनी वाणी (प्रेम वाणी) में स्पष्ट कहते हैं कि अन्त समय में फिल्म चलती है जिस गुरु से नाम लिया है वह भी सम्मुख आ जाता है। ऐसा प्राणी कुछ समय ऊपर के लोकों में रहता है। जब कोई सन्त सद्गुरु संसार में आता है वह उसके सम्पर्क में आता है और उसकी बाकी कमाई को पूरा करके वास्तविकता समझा कर छुटकारा दिला जाता है। जब से मुझे यह ज्ञान हुआ है कि मैं किसी के अन्दर में नहीं जाता हूं, मैं वास्तविकता ढूँढ़ने के लिये विवश हो गया हूं और वहाँ तक पहुंच भी गया हूं। वह अवस्था वर्णन में नहीं आ सकती है। तुम्हारे अपने अन्दर में गुरु रूप ही तुम्हारा अपना आपा है। कादरी बाबा कहते हैं कि मैं उनको नूर में दिखाई देता हूं। मेरे स्थान पर और कोई होता तो वह इसका प्रचार करता तथा खूब रुपया कमाता। चेले कहते कि फकीर साहिब कितनी करनी वाले हैं कि मुसलमान पीरों में भी प्रकट होते हैं। आम महात्मा यही कहते रहते हैं कि वह चेलों के अन्दर में जाते रहते हैं। यह पूर्णतया छल है। केवल रुपया इकट्ठा करने और झूठा मान तथा प्रतिष्ठा लेने के अतिरिक्त कुछ नहीं है। इन झूठे महात्माओं ने चारों ओर अन्धेर मचा रखा है। तुम

लोग सुनो ! परमात्मा या मालिकेकुल यहाँ नहीं रहता है केवल उसकी किरण प्रत्येक जीव में रहती है। यह ठीक उसी प्रकार से है जिस प्रकार सूर्य यहाँ नहीं होता वरन् उसकी किरणें यहाँ होती हैं। अभी सूर्य यहाँ आ जाये तो यह संसार भस्म हो जाय। इसी प्रकार से मालिकेकुल स्वयं यहाँ आ जाय तो उस समय प्रलय हो जाय।

परमात्मा की सेवा यह है कि मनुष्य दूसरे मनुष्य की सेवा करे, क्योंकि वह परमात्मा ही इन सब मनुष्यों के अन्दर निवास करता है। वही स्वयं प्रत्येक जीव-जन्तु में आया हुआ है। यही बात वेद तथा शास्त्र भी कहते हैं।

बस सबसे पहले तुम उनकी सेवा किया करो, जिनको प्रकृति ने तुम्हारे साथ लगा रखा है। बूढ़ी माँ है, बूढ़ा बाप है, विधवा बहन है और दूसरे लोग जो तुम्हारे साथ लगे हुए हैं तुम उनकी सेवा किया करो किन्तु तुम उन लोगों को तो पूछते तक नहीं हो और बाबा फकीर को देते हो, जिसका लड़का अठारह सौ रुपया मासिक वेतन पाता है और चिंता-मुक्त है।

यदि तुम उस स्वामी, मालिकेकुल या परमात्मा से मिलना चाहते हो तो वह प्राप्त हो सकता है किन्तु वह पिण्ड अण्ड, ब्रह्मांड से परे रहता है। तुम वहाँ जाओ तब वह प्राप्त होगा।

दाता दयाल ने मुझे जगत्-कल्याण का कार्य दिया और साथ ही यह भी कहा कि निबल, अबल और अज्ञानी जीवों की सहायता करते रहना और यह भी आज्ञा हुई थी कि वर्तमान शिक्षा को बदल देना। जो मुझे स्वयं प्राप्त हुआ है वह मैं कह चला हूँ।

आप लोगों से मुझे यह ज्ञान प्राप्त हुआ है कि जो अन्दर प्रकट होता है वह असल तत्त्व नहीं, वह तो वास्तव में माया है। जैसे तुम सिनेमा देखते हो परदे पर घोड़े दौड़ते हैं, औरतें गाती हैं। यह जो दृश्य सम्मुख आते हैं क्या वह सत्य होते हैं ? नहीं। उस समय हम इन चित्रों तथा दृश्यों को देखकर डरते हैं या प्रसन्न होते हैं या दुःखी तथा सुखी हो जाते हैं। सिनेमा हाल से उठते ही सब कुछ अदृश्य हो जाता है। इसी प्रकार सारा जगत् है। ये अपने ही मन की दुनिया है। चौदह लोक तक यह मन जाता है। ऐसा हमारे शास्त्र कहते हैं।

मुझे तो सत्संगियों की बदौलत यह ज्ञान प्राप्त हुआ है। पहले यह बात समझ में नहीं आती थी। दाता दयाल ने बहुतेरा समझाया फिर भी मैं उनकी बात को या सार को समझ न सका। बाद में मैंने सत्संगियों के अनुभव सुने और अपने अन्दर में धँसा तो मुझे यह विश्वास हो गया कि मैं जब किसी के अन्दर में नहीं जाता हूँ तो मेरे अन्दर में जितने विचार आते हैं या दाता दयाल जी का रूप आता है और इनसे बातचीत होती है, वह वास्तव में है नहीं। केवल अपने ही मन और विचार का अभ्यास होता है। यह सारा संसार अपने ही मन का अक्स है। अपने चिदाकाश या अन्तःकरण में जो हम सोचते हैं देखते हैं या करते हैं इन सबका प्रभाव उस पर पड़ता रहता है और वही संस्कार वहाँ छिपे रहते हैं। वे ही सब समय पर उभर आते हैं। वे कभी डराते हैं और कभी सुखी करते हैं। वास्तव में यह सब कल्पित हैं। सार कुछ नहीं है। यही कारण है कि धर्म के कई पन्थ इस संसार को तथा इसके व्यापार को मिथ्या या असत्य मानते हैं।

मैं सन् 1905 में राधास्वामी मत में सम्मिलित हुआ।

इस मत में आते ही राम, कृष्ण, मोहम्मद साहिब, बौद्ध या जैन या ईसाइयों का खंडन सुना। "माया संवाद" में इन सबका उल्लेख किया हुआ है। राधास्वामी मत की वाणी में लिखा हुआ है कि यह सब मत भूले हुए हैं। इसे पढ़कर दिल पर चोट लगी। उसी समय मैंने यह प्रण किया था कि जो कुछ इस मार्ग पर चलने से मुझे प्राप्त होगा वह मैं संसार वालों को बता जाऊंगा। सुनो! मैं अपने अनुभव का सार आप लोगों को बता चुका हूँ। आगे भी जीवनपर्यन्त बताता रहूंगा। मेरे वचन ही मेरे ज्ञान का सार हैं। संभव है इन पर रहनी बनाने से कुछ व्यक्तियों को जो अधिकारी हैं लाभ पहुँच सके।

जिस समय मानव यह ज्ञान प्राप्त कर लेता है कि यह सारा खेल अपने ही मन का नक्शा है तो उसे चितारहित जीवन व्यतीत करने का आनन्द आता है। अपने एक पत्र में मेरे दाता दयाल (गुरुदेव) मुझे ऐसा लिखते हैं :—

मक़तार गत जग जंजाल।
कोई फकीर काटै यह जाल॥

जब तक किसी को राम के या बाबा फकीर के या किसी और के दर्शन होते रहते हैं वह इसी में आनन्द लेता रहता है। या ऐसा समझो कि अभी वह मन के चक्कर से नहीं निकला है।

पिंड अण्ड ब्रह्माण्ड से पारा।
वह है देश हमारा॥

पिंड अपना शरीर है, देह है, अण्ड अपना मन है। वह मालिक, स्वामी या परमेश्वर इन दोनों से परे हैं। हम लोग वहाँ से आये हुए हैं। और फिर हेराफेरी अथवा

आवागमन का चक्र काट कर अन्त में सबको वहीं पहुंचना है। तात्पर्य कि बूंद को समुद्र में समा जाना है। देह के छः चक्र हैं, मन के छः चक्र हैं। और आत्मिक दुनिया के आगे भी छः चक्र हैं, इसलिए इसका नाम चक्री रखा हुआ है। रूहानी दुनिया या आत्मिक जगत् बड़ा भारी विशाल क्षेत्र है। तुम यह मानो वह ऐसे है जैसे भारत है, अमरीका है, अफ्रीका है। मन की रचना की तरह रूहानी दुनिया की भी रचना है, इसमें भी द्वीप और नगर हैं। तुम लोग वहाँ उस समय पहुंचोगे जब दसवें द्वार से आगे जाओगे। यह याद रहे जब तक कोई भी रूप तुम्हारे सम्मुख आता जाता रहेगा, चाहे वह दाढ़ी वाला हो, सितार वाला हो, पगड़ी वाला हो या टोपी वाला हो या नूर का मुकुट पहने हुए हो, तुम रूहानी दुनिया में प्रवेश नहीं कर सकते। मुझे गद्दी बनाने की कोई इच्छा नहीं है और न डेरे बनाने अथवा मोटरें खरीदने को आया हूं। मैंने ऐसे सौदे यहाँ आकर नहीं किये हैं। मुझे विश्वास हो गया है कि यह लेना-देना सब अपने कर्मों के अनुसार है।

जब तक केवल शब्द में किसी को बासा नहीं मिलता वह रूहानी दुनिया की ओर कभी भी नहीं जा सकता है।

नाम दसवें द्वार से आगे है। वह त्रिलोकी से परे है। मेरी एक पुस्तक "पाँच नाम की व्याख्या" है। तुम लोग उसे पढ़ो और देखो शायद जो अधिकारी हैं उनको उसके पढ़ने से लाभ पहुंच जाय। दुनिया तो ॐकार या अन्य नामों को जपते हुए मर गई। उनको खबर नहीं कि :—

नाम रहे चौथे पद मांहीं।
यह ढूंढ़ें त्रिलोकी मांहीं ॥
तीन लोक में बसता काल।
चौथे में रहें सन्त दयाल ॥

मैं सच्चाई का सन्देश दिये जाता हूँ। जिनके भाग्य में है वह लाभ उठावेंगे। यदि मानव यह मान ले कि वह केवल अपने प्रयत्नों से वास्तविकता को प्राप्त कर सकता है तो यह एकदम असत्य है। यह वस्तु उसे प्राप्त होगी जिस पर मालिक की दया होगी और जो (राजी व रजा रहने की आदत) उसकी इच्छा पर अपने को छोड़ देने के स्वभाव वाला होगा।

तुम लोग संसार के कर्म भी करते जाओ और बुराइयों शिकायतों, चुगलियों से एक दम दूर रहने का प्रयत्न करते रहो। तब तुम समय पर ठौर-ठिकाने पर पहुंच जाओगे। इससे अधिक और क्या कहा जावे।

तुमने सन्तान उत्पन्न की है। तुमसे किसी ने पुत्र बन कर ऋण लेना है और किसी की लड़की बन कर ऋण लेना है। सब्र और शान्ति के साथ सब का भुगतान करो। मैं हूं जो तुमको सहारा देने के लिये कभी-२ झूठ-मूठ की बातें कर देता हूं। सन्तों जैसा कोई झूठा मानव देखने में नहीं आयेगा। सन्तों की नीयत एक दम साफ रहती है। केवल सहायता देने के बिचार से वह तुमको झूठ या सत्य बात कह देते हैं कोई भी मेरे पास आवे–मैं कह देता हूं "मालिक दया करेगा।" मुझे तो अच्छा ही विचार देने से हित है, मैं इसे बुरा नहीं समझता हूं।

त्संग परमसन्त हजूर मानव दयाल

डा. आई. सी. शर्मा जी महाराज

लखनऊ—(ऊषा तलवार के घर) 4-3-1987

साधु गुरु का रूप लखाऊँ ॥

जो कोई आवे मेरी सभा में, गुरु का रूप लखाऊँ ।
सत रज तम के हद से बाहर, गुरु मूरति दरसाऊँ ॥
निर्गुण सगुण देह नहीं जाके, अद्भुत भेद जताऊँ ।
हाड़ माँस नाड़ी नहीं जाके, बाके रूप न नाऊँ ।
सब का सबमें सबसे न्यारा, मरम विचित्र जताऊँ ॥

रूप अरूप स्वरूप अनूपा, निराकार ठहराऊँ ।
ाधास्वामी चरन शरन बलिहारी पल-पल गुरु गुन गाऊँ ॥

अखण्डमंडलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

परम तत्वस्यावतारम्, परमपूज्यं सत्संगिनाम् ।
मानवस्य परमिष्टम्, फकीरं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

ाधास्वामी !

मेरी अपनी ही आत्मा के स्वरूप सत्संगी भाइयो और बहनो, आज एक छोटे से पारिवारिक सत्संग के मौके पर आपको जो शब्द सुनवाया गया है, वह दाता दयाल जी

महाराज का है। यह शब्द बहुत महत्त्व रखता है। सन्तमत या राधास्वामी मत या मानवता धर्म युगों से चला आ रहा है। यहाँ पर सनातन धर्म का मतलब वह सनातन धर्म सभा नहीं जो स्कूल, कालिज चलाती है, वह तो राजनैतिक सनातन धर्म की सभाएं हैं। यहाँ पर सनातन धर्म का मतलब है—वह आदि तत्त्व जिस पर सारा जगत् आधारित है। गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को कहा 'एष धर्मः सनातनः' अर्थात् यह सनातन धर्म है। मैंने मंगलाचरण में कहा—

'अखण्डमंडलाकारम् ।'

जब सत्यवान की सृष्टि चली अर्थात् मालिक की धार चली तो वह धार मंडल बनाती हुई—सत्यलोक, तपःलोक, जनः लोक, स्वः लोक, भुवः लोक बनाती हुई पृथ्वी पर जड़ वस्तुओं में आकर सो गई। उस धार ने ये मंडल बनाये जैसे हमारा एक मंडल है ऐसे ही अनेक मंडल हैं। कोटि-२ ब्रह्माण्ड हैं। ये मंडल चल रहे हैं। पृथ्वी चल रही है, चन्द्रमा चल रहा है, सूर्य भी चल रहा है। सिर्फ दृष्टि का अन्तर है।

'दृष्टि सृष्टि का सकल पसारा।
जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि ॥'

कुछ लोग समझते हैं कि वेदों में लिखा है कि पृथ्वी चल रही है मगर सूर्य स्थिर है या सूर्य चल रहा है और पृथ्वी स्थिर है।

कुछ धर्मों के विचार तो बहुत ही निःकृष्ट हैं। ज्यों-२ साइंस बढ़ती है उनका धर्म समाप्त होता चला जाता है। ये धर्म अभी भी समझते हैं कि पृथ्वी चपटी है—गोल नहीं है। जब पहला मानव चन्द्रमा पर उतरा और लोगों ने देखा

ो बुद्धिमान लोग तो प्रसन्न हुए लेकिन संकीर्ण विचार वालों
निन्दा की। अमेरिका में एक फर्नीचर बेचने वाला था।
उसकी दुकान पर गया। वह उदास बैठा था। मैंने
छा 'जौनी ! क्या बात है? तू उदास क्यों बैठा है ?' जौनी ने
हा, "डा. शर्मा मुझे बड़ा अफसोस है कि ये लोग चन्द्रमा
र चले गये"। जौनी को यह डर था कि खुदा चन्द्रमा पर
ता है। मैंने कहा 'तुझे क्या फिकर है'। कहने लगा
गर उस चन्द्रमा पर कोई और लोग आने वाले हों और
द्रमा पर जो धर्म-ग्रन्थ है, अगर वह हमारी बाइबिल नहीं
तो अन्याय हो जायेगा"। उन लोगों का विचार है कि
इबिल ही एक धर्म-ग्रन्थ है जो लिखा गया है। जौनी
ने लगा "अब आँधी-तूफान आयेंगे।" कुदरती आँधी-
ान आ भी गया। उनका विचार बहुत ही दकियानूसी
योंकि उनके धर्म-ग्रन्थ में लिखा है कि एक दिन खुदा उठा
ा नहीं सोया हुआ उठा, पता नहीं जागा हुआ उठा।
ार के अन्दर अन्धकार ही अन्धकार था। इसलिए खुदा
काश बनाया, फिर आकाश बनाया, पृथ्वी बना दी, जल
ा किया, चौथे दिन उसने जल के अन्दर मछलियाँ पैदा
दीं। पृथ्वी के ऊपर उसने वनस्पति पैदा कर दी।
वें दिन उसने पशु बनाये। छठे दिन उसने
ने जैसा मनुष्य का पुतला बनाया और उस पुतले में फूंक
कर जान डाल दी। मनुष्य की छाती से एक हड्डी
ाल कर स्त्री बनाई, जिससे मनुष्य अकेला न रहे।
ा ने स्त्री-पुरुष से कहा "तुम यहाँ रहो। पशु-पक्षी
तेरी सल्तनत रहेगी। सब प्रकार की सब्जियाँ, फल तेरे
ा के लिए हैं।" लेकिन खुदा ने एक वृक्ष दिखा कर कहा
ा इस वृक्ष के फल को मत खाना। इस फल को न
से तू मेरी मूर्ति है, मेरा स्वरूप है, तू आनन्द से रहेगा"
ा ने छः दिन काम करने के बाद सातवं दिन आराम

फरमाया। ऐसा भी कोई खुदा है जो छः दिन काम करने के बाद थक जाये। अरे वह तो सर्वशक्तिमान है। उनके धर्म में कितना अन्धविश्वास है जो आज तक चला आ रहा है।

फकीर का अर्थ है—'परमतत्त्व'।

यही रूप आपका है और जगत् का है। जैसा हमारा स्थूल शरीर है वैसे ही उस मालिक का स्थूल शरीर है। मालिक का स्थूल शरीर कोटि-२ ब्रह्मांड हैं जिसे मालिक का विराट् रूप भी कहते हैं। जो कुछ ब्रह्मांड के अन्दर है, वह सब कुछ आपके शरीर के अन्दर मौजूद है। जितने चाँद, सितारे, आकाशगंगाएँ, नक्षत्र वहाँ मौजूद हैं उतने ही यहाँ पर मौजूद हैं। इसलिए जब सत्संगी को अन्तर का अभ्यास कराया जाता है, तो उसे चाँद, सितारे आदि दिखाई देते हैं। ये चाँद, सितारे, आकाशगंगा, नक्षत्र सब चल रहे हैं। वेदों में सृष्टि के बारे में जगत् के तीन दृष्टिकोण बताये गये हैं। (1) दृष्टिमूला सृष्टि। इस आधार पर पृथ्वी ठहरी हुई है, और सूर्य चल रहा है। दृष्टिमूला सृष्टि हमारी ज्ञानेन्द्रियों के अनुभव पर आधारित है।

(2) स्थितिमूला सृष्टि :—इसका अर्थ यह है कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी उसकी परिक्रमा कर रही है। इसको आप वैज्ञानिक दृष्टिकोण कह सकते हैं।

(3) सृष्टिमूला सृष्टि का दृष्टिकोण :—इसे परा दृष्टिकोण या परावैज्ञानिक दृष्टिकोण कहते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार सूर्य भी स्थिर नहीं है। सूर्य परमेष्ठी की परिक्रमा कर रहा है अर्थात् सूर्य आकाशगंगा के विष्णु की परिक्रमा कर रहा है। यह परा वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। लेकिन पश्चिम का अपरावैज्ञानिक दृष्टिकोण है। पश्चिम के

वैज्ञानिक दूरबीनों से देखते हैं। अब आज का विज्ञान कहता कि सूर्य भी स्थिर नहीं है। वह भी किसी केन्द्र की परिक्रमा कर रहा है। लेकिन वेदों के अनुसार अनेक सौरमंडल, आकाशगंगा के अन्दर जो परमेष्ठी है, जिसको विष्णु कहा है उसके चारों ओर परिक्रमा कर रहे हैं। यह दृष्टिकोण आज के विज्ञान में लखाता है या सन्तों ने तथा ऋषियों ने भी इस बात का अनुभव किया है। इसके आगे भी अनेक आकाश गंगाएँ हैं। अनेक परमेष्ठी परिक्रमा कर रहे हैं स्वयंभू प्रजापति की। वह प्रजापति जो विराट् का केन्द्र है, उससे स्वत: का एक तत्त्व निकलता है, जिसके चारों ओर कोटि-२ ब्रह्मांड परिक्रमा कर रहे हैं। ये सब कैसे चल रहे हैं? इन सबको चलाने वाला प्रजापति स्थिर है। इसी प्रजापति पर सब आधारित है। प्रजापति सबका आधार है। वो ही धर्म है। प्रजापति सबको चलाता है लेकिन स्वयं नहीं चलता। यह पैंडा नहीं होता है। यह कोई काल्पनिक बात नहीं है। मैं आपको बता रहा था कि सनातन धर्म क्या है? सनातन धर्म वह आधार, सर्वाधार है जिससे कोटि-२ ब्रह्मांड कोटि-२ शिव, कोटि-२ विष्णु और कोटि-२ विराट् निकले हैं। ये सब चल रहे हैं लेकिन वह स्थिर है और उसी का अंश हमारे अन्दर मौजूद है जिसे विशुद्ध आत्मा कहते हैं। सब कुछ चल रहा है लेकिन वह अचल है, प्रतिष्ठित है, स्थाणु है, स्थानी है। इसलिए कहा जाता है कि मृत्यु है ही नहीं। सनातन धर्म-आधार का पता बताता है। यही धर्म अर्थात् सत्ता सारे ब्रह्मांड को बहुत सुचारु रूप से चला रही है। जरा आप सोचो कि क्या सौर मण्डल में पृथ्वी ने कभी गलती की। इन सबको चलाने वाली शक्ति का नाम अखण्ड है। जैसे विश्व के अन्दर अखण्डमंडलाकार हैं वैसे ही मनुष्य के अन्दर भी हैं। हमारा स्थूल शरीर मन के चारों

ओर परिक्रमा कर रहा है। अर्थात् मन उसे चला रहा है। जैसे विष्णु स्थूल जगत् का पालन-पोषण करता है वैसे ही हमारा मनरूपी विष्णु स्थूल शरीर का पालन-पोषण कर रहा है। आज वैज्ञानिक, डाक्टर मान रहे हैं कि 95% बीमारियाँ मानसिक होती हैं। मन परिक्रमा कर रहा है आत्मा की। आत्मा केन्द्र है। इसलिए सबके अन्दर चलाने वाली एक ही शक्ति है जो अनेक रूपों में प्रकट होती है। इस सच्चाई को जो सद्गुरु बता कर अर्थात् दिखाकर। हमारे जीवन को समरूप बना देता है, उस गुरु को नमस्कार है। यही बात दाता दयाल जी महाराज ने अपने शिष्य परम दयाल जी महाराज को कही :—

रूप तेरा अति प्यारा फकीरा, रूप तेरा अति प्यारा।
तू है सत् चित् आनन्द मूरत, तू तीनों से न्यारा॥

तू शरीर, मन और आत्मा से न्यारा है। तेरा असली रूप विशुद्ध आत्मा है जो शरीर, मन और आत्मा से आगे है। विशुद्ध आत्मा को ही सुरत कहा है। इस विशुद्ध आत्मा को जानने में गलती क्यों होती है? क्योंकि आप समझते हो कि परमतत्त्व चल रहा है जबकि वह अचल है। जैसे चन्द्रमा के आगे से जब बादल निकलता है तो ऐसा लगता है जैसे चन्द्रमा चल रहा है। हमारे शरीर के अन्दर परमतत्त्व का अंश है। इसी अंश से हमें शरीर का आभास होता है, सुख-दुःख का आभास होता है, ज्ञानेन्द्रियों का अनुभव होता है। लेकिन स्वप्न की हालत में जब सुरत शरीर से निकल कर मन में ठहर जाती है तो उस समय हमारा स्थूल शरीर काम नहीं कर रहा होता है। उस समय मानसिक जगत् होता है, मानसिक अनुभव होते हैं। उस वक्त हमारा सूक्ष्म शरीर अनुभव कर रहा होता है और स्थूल शरीर सोया हुआ होता

है। स्वप्न में आप देखते हैं हरिद्वार है, हर की पौड़ी पर स्नान कर रहे हैं, जल ठण्डा है लेकिन यह वास्तविक अनुभव है। वास्तव में आपका सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर से बाहर जाता है और एक सूत्र आत्मा के द्वारा आत्मा से जुड़ा रहता है। सूक्ष्म शरीर अपनी शक्ति को इसी सूत्र के द्वारा स्थूल शरीर में भेजता रहता है जिससे शरीर का कार्य चलता रहता है। लेकिन जब सूत्र आत्मा कट जाती है, तब मृत्यु होती है। जब मृत्यु होती है तब हमारा सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर से बाहर निकल जाता है। सूक्ष्म शरीर एक्टोप्लाज्मक पदार्थ का बना हुआ होता है। हमारा विज्ञान केवल यहाँ तक पहुँचा है। सूक्ष्म शरीर की कैमरे से फोटो ली जा सकती है। सूक्ष्म शरीर चित्तरूप है। इसके बाद कारण शरीर अर्थात् आत्मा है जिसका शरीर प्रकाश का है। प्रकाश मण्डल है। योगी एक स्थान पर बैठे-२ कोटि-२ ब्रह्मांड का अपनी साधना के द्वारा भ्रमण कर सकता है। हमारा सनातन धर्म वैज्ञानिक है। सनातन धर्म अनुभव पर आधारित है। विज्ञान पीछे रह जाता है।

तू है सत् चित् आनन्द मूरत।

गहरी नींद में आत्मा काम करती है। उस समय आनन्द ही आनन्द होता है। आनन्द के अलावा और कोई अनुभव नहीं होता है। सत् चित् आनन्द तो आप स्वयं ही हैं। लेकिन सत् चित् आनन्द को धारण करने वाला स्थाणु अविनाशी तत्त्व है जिसको ऋषि-मुनियों ने विशुद्ध आत्मा कहा है और सन्तों ने सुरत कहा है। इसलिए सुरत इन तीनों से न्यारी है।

तेरी गति मति बुद्धि न जाने

इसकी गति क्या है ? अरे सुरत की गति तो है ही नहीं। अब आप कहेंगे कि दुनिया में दुःख क्यों होता है ? मैं समझता हूँ कि दुनिया में दुःख नहीं है। चूँकि आपकी दृष्टि बाहर है इसलिए आपको दुःख लगता है। आप दृष्टिमूला सृष्टि के सिद्धान्त पर टिके हैं। जैसे आप एक स्टेशन पर रेलगाड़ी में बैठे हुए हैं। आपकी दृष्टि बाहर है। आपके पास से दूसरी रेलगाड़ी गुजरती है। आपको लगता है कि अपनी गाड़ी चल रही है. मेकिन जैसे ही आप अन्दर दृष्टि डालते हैं तो आप देखते हैं कि अपनी गाड़ी खड़ी है। तो यह जो दुनिया के अन्दर शरीर का सुख-दुःख होता है, यह तभी तक होता है जब तक आपकी दृष्टि बाहर है। अन्तरदृष्टि करने से आप शरीर, मन, आत्मा से परे जा सकते हैं।

तेरी गति मति बुद्धि न जाने, अटक रही मझधारा।

बुद्धि हमारी काँट-छाँट करती है। ज्ञान-योग बुद्धि के द्वारा काँट-छाँट करता है और मनुष्य यह सोचने के लिए मजबूर हो जाता है कि पृथ्वी, सूर्य, आकाश कहाँ से आये और कैसे चल रहे हैं ? ये सब गतिरूपी प्रकाश से चल रहे हैं। प्रकाश 1 लाख 86 हजार मील की गति से चलता है। यहाँ तक खोज करने के बाद आइंस्टाइन ने कहा "इस के आगे मुझे पता नहीं, ईश्वर जाने।" विज्ञान कहता है कि इस जगत की जो आधारशिलाएँ हैं परमाणु हैं अर्थात् इलैक्ट्रोन, प्रोटोन, न्यूट्रोन हैं, इन दोनों को इकट्ठा कर सकते हैं, उनको अलग कर सकते हैं। अगर वह परमाणु के केन्द्र को हटा लें तो इसके अन्दर इलेक्ट्रोन, प्रोटोन टकरा जायेंगे। इस टकराने से प्रकाश पैदा होगा। यह परमाणुओं के हिस्से को पैदा नहीं कर सकता। अब सोचो यह इलेक्ट्रोन, प्रोटोन कहाँ से आये ? यह शक्ति कहाँ से आई ? साइंसदान कहते हैं कि

यह शक्ति कॉस्मिक रेज (ब्रह्माण्डो किरणों) से आई। परम दयाल जी महाराज ने कहा कि यह कॉस्मिक रेज ही ब्रह्मांडी मन है, जो इसको पैदा करता है। मन शरीर के रूप को पैदा करता है। यह उसकी वैज्ञानिक व्याख्या है। जब लोगों को महाराज जी का रूप प्रकट होता था तो महाराज जी कहा करते थे "मैं नहीं था। तुम्हारा अपना मन था"। तुम जिस रूप का ध्यान करते हो, वह रूप तुम्हारे सामने प्रकट हो जाता है। काश्मीर में निर्मला पंडित डूब रही थी। उसने फकीर बाबा को याद किया। फकीर बाबा प्रकट हुए और डूबती हुई निर्मला पंडित को बचा लिया। परम दयाल जी महाराज ने जब इस बात को सुना तो उन्होंने कहा "मैं नहीं था।" मैं उस औरत को बचाने के लिए नहीं गया। उस औरत के काल्पनिक मन की विश्व-व्यापी काल्पनिक किरणों ने मेरा रूप बनाकर उसे बचा लिया"। यह वैज्ञानिक चीज है। इसलिए हम कहते हैं कि हम प्रकट नही होते। तुम्हारे विश्वास से वह शक्ति हमारा रूप बनाकर प्रकट हो जाती है। मैं आपको सच कह रहा हूं। मैंने अपनी आँखों से देखा है। मेरे एक मित्र हैं, डा. कल्लाह, पहले वह योगी भी थे और तान्त्रिक भी थे। अब वह मालिक के भक्त हो गये हैं। उन्होंने मेरे सामने एक आदमी के शरीर को पैदा कर दिया फिर उससे बातचीत करा दी। यह मानसिक शक्ति है। विद्वानों ने बुद्धि से काँट-छाँट करते हुए अन्त में कहा कि इस गति से परे कोस्मिक रे है। हम नहीं जानते कि गति से परे क्या है? गति से परे जो कुछ है वह तुम्हारे अन्दर है। मन के पार आत्मा है। यह आत्मा अचल प्रतिष्ठित है। वह चल नहीं रही है। उसको सद्गुरु की कृपा से साधना के द्वारा अनुभव किया जा सकता है। अनुभव करने के बाद पता चलेगा कि आत्मा दुःखी नहीं है

बल्कि शरीर और मन दुःखी हो रहा है। इसलिए प्रेम का मार्ग सबसे ऊँचा है। प्रेम बुद्धि के द्वारा काँट-छाँट नहीं करता। वह एक है या अनेक है, नहीं गिनता। भक्त तो शरणागत होकर कहता है कि मैं तो तेरा हूं। ऐसा भक्त मालिक के पास जल्दी पहुँचता है। इसलिए यह रास्ता प्रेम का है।

तेरी गति मति बुद्धि न जाने

जो बुद्धिमान हैं वह तो काँट-छाँट करते रहते हैं और जो सरल स्वभाव के हैं वह मालिक के शरणगत होकर रूप प्रकट कर लेते हैं और उनको आगे चलकर ज्ञान भी हो जाता है। ज्ञान सबको एक करता है। एकत्व का अनुभव कराने वाला ज्ञान तब मिलता है, जब मनुष्य प्रेम के रास्ते पर चल कर शरणागत हो जाता है।

राधास्वामी सतगुरु आये, भेद दिया पूरा - २।
जो कोई भेदभाव को मेटे, सतगुरु का सेवक सूरा ॥

अब यहाँ पर राधास्वामी शिवदयाल जी महाराज के लिए नहीं कहा गया। राधास्वामी परमतत्त्वातार युगों - २ के अन्दर कोटि-२ ब्रह्मांडों के अन्दर अवतरित हुए हैं। तुलसीदास जी ने भी कहा है :-

नाना भाँति राम अवतारा, रामायण शत कोटि अपारा।

सबके पीछे एकत्व का अनुभव करने के लिए ज्ञान की जरूरत है।

कर्म किया सत की चढ़ा घाटी।
मन में विवेक विचारा ॥

कर्म क्या है? सत्संग में आना कर्म है। सत्संग के अन्दर आने का अर्थ है 'सत की चढ़ा घाटी' अर्थात् सत् की

तरफ चला तब उसे मन में विवेक हुआ उसको पता चला कि स्थायी क्या चीज है, और अस्थायी क्या चीज है? रूप क्या है? अरूप क्या है और स्वरूप क्या है? रूप है शरीर, अरूप है मन और स्वरूप है आत्मा। इन तीनों के अनुभव के बाद पता चला कि इन्हीं तीनों के पीछे वह मालिक मौजूद है जो सब में व्याप्त है। राधास्वामी सतगुरु आये। अनुभव करने वाला गुरु आया, चाहे कृष्ण के रूप में आया, चाहे राम के रूप में आया, बुद्ध के रूप में आया, कबीर के रूप में आया, स्वामी जी महाराज के रूप में आया, राय सालिग राम जी के रूप में आया, दाता दयाल के रूप में आया, परम दयाल जी के रूप में आया, चाहे वह किसी भी रूप में आया, लेकिन उसने आकर के यह बताया कि सबके अन्दर जो जोड़ने वाला सोने का धागा है, वही एक है तथा परम-तत्त्व है। जब किसी भक्त को अनुभव हो जाता है तो वह उस मालिक को सबके अन्दर देखने लग जाता है और सबसे प्यार करता है। भक्त को असली ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

सद्गुरु तुम्हारे अन्दर है। ज्ञानदाता गुरु आपको भेद बताता है। "जो कोई भेदभाव को मेटे" भेद है तुम्हारे-मेरे शरीर में। भेद है व्यवहार में। जहाँ तक व्यवहार की बात है वह सबसे एक जैसा नहीं किया जा सकता है। अपनी माँ से, अपनी बहन से अपनी पत्नी से, अपने मित्र से शरीर के द्वारा एक जैसा व्यवहार नहीं कर सकते हैं। जैसे गुरु को नमस्कार करेगा तो मित्र से हाथ मिलायेगा। भेद का जो भाव है यह अलगाव है। यह मेरे से अलग है। इस भेद-भाव से नफरत हो जाती है। इसलिए इस भाव को हटाकर मालिक से एकत्व का भाव लाना है। आगे कहा है—"सत की चढ़ा घाटी, मन मैं विवेक विचारा"। जब ऊपर सत्

की तरफ जाता है तो आनन्द ही आनन्द आता है। यह बात हर व्यक्ति पर लागू होती है। हर आदमी फकीर है।

तीन त्याग चौथे को धारे, सो सबका आधारा।
द्वन्द्व जगत् त्रिपुटी की त्रिकुटी, छोड़ चला घरबारा।

यह द्वन्द्वात्मक जगत् है। इस जगत् में दुःख है, सुख है, लाभ है, हानि है, जय है, पराजय है, दिन है, रात है, गर्मी है, सर्दी है। यह सब कुछ तीन गुण अर्थात् सत्, रज, तम से निकलता है। जितने भी देवी-देवता हैं, ये सब प्रकाश की अभिव्यक्ति हैं। देवताओं के पीछे प्रकाश है। ब्रह्मा विराट् है, विष्णू अव्याकृत अर्थात् ब्रह्मांडी मन है और शिव आत्मा है। भक्त त्रिकुटी में अनुभव करने के बाद ब्रह्मा, विष्णु, शिव अर्थात् शरीर, मन, आत्मा से परे चौथे पद की तरफ जाता है। छोड़ चला घर बारा का अर्थ है—शरीर, मन, और आत्मा से आगे जाना। जब भक्त इन तीनों से आगे जाकर के मालिक का अनुभव करता है तब वह फकीर होता है।

हद से टपे सो औलिया, बेहद टपे सो पीर।
हद बेहद दोनों टपे, वाको कहें फकीर॥

हद है शरीर। यदि आप शरीर की हद तक जाना चाहते हैं तो आपको सिद्धिशक्तियाँ प्राप्त हो जायेंगी। आप अपने मन को किसी इष्ट पर टिका कर के अजपाजाप करने से आपको सिद्धि प्राप्त हो जायेगी। इस प्रकार सिद्धि प्राप्त करने के लिए अपनी सुरत को जब शरीर से हटा कर मन में केन्द्रित करोगे तो शरीर तुम्हारे सन्तुलन में आ जायेगा जिससे सारी बीमारियाँ समाप्त हो जायेंगी तथा सिद्धि-शक्ति प्राप्त होने से औलिया बन जायेगा। औलिया कौन है? औलिया वह है जो भविष्य में होने वाली बात को बता

देता है क्योंकि मन भूत, भविष्य और वर्तमान का ज्ञाता है। अब अगर मन से आगे चलकर प्रकाश में रहेगा तो वह सिद्धिशक्ति से जरा ऊँचा उठ जायेगा और वह मस्ती में रहेगा। ऐसा व्यक्ति आपको रास्ता दिखा सकता है और गुरु माना जा सकता है। इसे पीर कहते हैं। लेकिन जो व्यक्ति आत्मा से भी परे, उस परमतत्त्व अर्थात् मालिक के साथ एक हो जाता है और जो केवल भक्ति मांगे और कुछ नहीं चाहता है, ऐसे व्यक्ति को फकीर कहते हैं। फकीर ! आत्मा से परे रहता है। फकीर जो कुछ कह देगा वह सच होगा। ब्रह्मा, विष्णु, शिव तीनों इसके नीचे हैं।

एक राजा था, जो धर्मपरायण, देखने में सुन्दर तथा बहुत अच्छे स्वभाव का था। सारी प्रजा उसको बहुत पसन्द करती थी। लेकिन राजा के कोई सन्तान न थी। राजा को एक पुत्र की बहुत इच्छा थी। राजा ने ब्राह्मणों को बुलाकर पुत्र प्राप्ति के लिए यज्ञ कराया। ब्राह्मणों ने भी ऐसी विधि से यज्ञ किया कि ब्रह्मा प्रकट हो गये। ब्रह्मा ने राजा से कहा "राजा ! क्या चाहता है ?" राजा ने कहा "महाराज मुझे एक पुत्र चाहिए।" ब्रह्मा ने कहा "राजन् ! तूने इतना बड़ा यज्ञ कराके मुझे प्रकट किया है। मैं मजबूर होकर आया हूँ। इस जन्म में पुत्र नहीं दे सकता।" ब्रह्मा चले गये। राजा को इस बात का कुछ दिन बहुत दुःख रहा। कुछ दिनों के बाद लोक-लोकान्तरों का भ्रमण करते हुए देवर्षि नारद आये। राजा ने देवर्षि नारद की बहुत सेवा की। नारदमुनि ने कहा "भक्त ! क्या चाहता है ? राजा ने कहा "महाराज ! क्या कहूं ? मेरे कोई पुत्र नहीं है। मैंने तो बहुत बड़ा यज्ञ भी किया। यज्ञ में ब्रह्मा जी प्रकट हुए लेकिन उन्होंने कहा कि तेरे इस जन्म में पुत्र नहीं है।" देवर्षि नारद ने कहा "बस इतनी सी बात है।

अरे ब्रह्मा की क्या मजाल ? मैं तो विष्णु का भक्त हूं। ब्रह्मा तो उनकी नाभि से निकले हैं और विष्णु के आधीन हैं। मैं तेरी सिफारिश विष्णु से करूंगा"। अब नारदमुनि विष्णु भगवान के पास गये और विष्णु भगवान की खूब प्रशंसा की, कि हे भगवन्! आपका मेघ वर्ण है, शान्त तथा गम्भीर आकार है, लक्ष्मी आपके कदमों में है। आप कमलनयन हो। सारे देवी-देवता आपका ध्यान करते हैं। आप भव के भय को मिटाने वाले हैं।" विष्णु ने कहा "नारद! क्या बात है ? आज तू मेरी बड़ी खुशामद कर रहा है। इतना तो हम जानते हैं कि तू अपने लिए नहीं कर रहा है, किसी और की सिफारिश लाया होगा।" नारद ने कहा "महाराज एक राजा है। वह बड़ा भक्त है। उसको एक पुत्र दे दीजिये।" विष्णु भगवान ने कहा "भाई नारद! यह तो मेरा विभाग ही नहीं है। यह विभाग तो ब्रह्मा जी का है। तुम सिफारिश लाये हो. अब क्या करें ? अच्छा ब्रह्मा को बुलाओ।" ब्रह्मा जी आये। विष्णु भगवान ने कहा "ब्रह्मा जी! नारद एक राजा की सिफारिश लाये हैं। आप उस राजा को एक पुत्र दे दो"। ब्रह्मा जी ने कहा "महाराज! इस राजा के भाग्य में इस जन्म में पुत्र नहीं है। इस राजा को अगले जन्म में पुत्र मिलेगा"। विष्णु भगवान ने कहा "भई देखो नारद, मेरा विभाग तो पालन-पोषण का है। इस लिए मैं कुछ नहीं कर सकता हूं"। नारदमुनि चुप हो गये। नारद जी ने ने राजा को जाकर कहा "राजन्! सिफारिश तो नहीं लगी क्योंकि विष्णु भगवान का यह विभाग ही नहीं है"। राजा ने कहा कोई बात नहीं है। आपने ही सिफारिश के लिए कहा था।

कुछ महीने गुजरने के बाद राजा के यहाँ एक मस्त

फकीर आया। राजा ने उस फकीर की भी सेवा की। फकीर ने कहा "भक्त ! तूने मेरी बहुत सेवा की है माँग तू क्या माँगता है ?" राजा ने कहा "महाराज ! मैं क्या माँगूं ! जो मैंने माँगा वह मुझे मिला नहीं"। राजा ने फकीर को सारी कहानी सुनाई। फकीर ने कहा बस ! अरे ब्रह्मा, विष्णु, नारद-वारद कुछ नहीं। एक, दो, तीन, चार जा तेरे चार पुत्र होंगे"। फकीर चला गया। कुछ समय के पश्चात् राजा के चार पुत्र पैदा हुए। कुछ अरसे के बाद देवऋषि नारद ने उधर से गुजरे और राजा के पास गये। राजा ने देवऋषि नारद की सेवा तो की मगर पहले जैसी नहीं की। देवऋषि नारद ने सोचा आज भक्त ठण्डा है। देवऋषि नारद ने देखा कि महल में चार बच्चे खेल रहे थे। देवऋषि नारद ने पूछा "राजन ! क्या बात है ? ये बच्चे किसके हैं ?" राजा ने कहा "महाराज ! ये चारों पुत्र मेरे ही हैं"। नारदमुनि ने कहा 'राजन् तेरे चार पुत्र कैसे हो गये' ? राजा ने कहा 'महाराज ! आपके जाने के कुछ समय बाद एक मस्त फकीर आया था। मैंने उसे सारी बात बताई। उसने कहा ब्रह्मा, विष्णु, नारद-वारद कुछ नहीं। जा तेरे चार पुत्र होंगे। अब मेरे चार पुत्र हैं।

देवऋषि नारद बड़े गुस्से में बिस्णु भगवान के पास गये और बोले "यह क्या बात ? मेरी सिफारिश तो मानी नहीं और फकीर के कहने पर आपने राजा को चार पुत्र दे दिये"। विष्णु भगवान ने कहा "नारद ! वह फकीर है और मैं उससे डरता हूं। तुम मेरे साथ घूमने चलो। मैं तुमको बताऊंगा कि मैं उससे क्यों डरता हूं ?"

दोनों घूमने निकल गये। दोनों को चलते-२ रात हो गई। नारद ने कहा "महाराज ! भूख लगी है, प्यास लगी

है।" विष्णु भगवान ने कहा "देखो नारद ! सामने चिराग जल रहा है। शायद वहाँ कोई भक्त रहता है। वहीं चलते हैं। वहाँ पर खाना भी मिलेगा।" जब दोनों वहाँ पहुँचे तो वहाँ एक फकीर बैठा था। फकीर खाना तब खाता था जब कोई मेहमान पहले आकर खा ले। फकीर को पता नहीं था कि यह भगवान है क्योंकि दोनों मनुष्य के रूप में थे। फकीर ने कहा "भगवन् ! आप आ गये। मैंने कई दिन से खाना नहीं खाया। मैं पहले आपको खाना खिलाऊँगा तब मैं स्वयं खाऊँगा"। फकीर खाना बनाने के लिए अन्दर गया तो वहाँ सब चीज थी परन्तु लकड़ी नहीं थी। अब लकड़ी लेने कौन जाये ? खाना जल्दी बनाना था। फकीर ने एक धोती अपनी टाँग पर लपेटी और उस पर मिट्टी का तेल डाल कर जला दिया और पूरी तलने लगा तथा मेहमानों को खिलाने लगा। नारदमुनि ने कहा" भई जल्दी बना बड़ी भूख लगी है"। इतना कह कर वह दोनों अन्दर आ गये कि देर क्यों लग रही है ? विष्णु ने देखा कि फकीर मालिक के प्रेम में बनाये चला जा रहा है। उसे पता ही नहीं कि उस की टाँग जल रही है। विष्णु भगवान ने नारदमुनि से कहा "नारद देख ! मैं इससे डरूँ कि नहीं ? यह मेरे ध्यान में इतना मस्त है कि तन, मन, धन भी भूल गया। यह शरीर, मन, आत्मा से परे चला गया। दूसरी बात यह है कि फकीर मेरा बेटा है। राजा ने जब इससे पुत्र माँगा तो इसने यह नहीं कहा कि मैं सिफारिश करूँगा। इसे तो अधिकार है कि बाप की दौलत को लुटा दे। फकीर ने बाप की दौलत को लुटा दिया। प्रेम के अन्दर कोई नियम नहीं होता।"

हद बेहद दोनों टपे, वाको कहें फकीर !
जो हद और बेहद दोनों से परे चला जाता है उसे

फकीर कहते हैं।

न ही तू दोय, न तीन-चार है, न ही तू सहस हजारा,
एक एक है, एक एक है, जानै जाननहारा ।

न तू दो है, न तू तीन है, न तू शरीर है, न मन है, न आत्मा है, न ब्रह्मा है, न विष्णु है, न शिव है। न तू तीन गुण है, न चित्त, मन, बुद्धि अहंकार है और न तू सहस्र हजार है। अरे तू तो सारे जगत् के अन्दर व्याप्त है ।

राधास्वामी दयारूप लख अपना, तू व्यापक संसारा ।

मालिक का रूप-रंग रूप से परे है जो आपको इस समय दिखाया जा रहा है। यही मालिक का रूप सद्गुरु का रूप है।

साधो गुरु का रूप लखाऊँ।
जो कोई आवे मेरी सभा में, गुरु का रूप लखाऊँ ॥

जो सत्संग में आता है उसको हम देवी-देवता का रूप नहीं दिखाते। ये देवी-देवता तुम्हारे अन्दर हैं । ये प्रकाश में आये हैं। प्रकाश उस मालिक का एक रूप है। प्रकाश से आगे शब्द रूप है। शब्द रूप से आगे वह अपने आप में निजरूप है। तो यहाँ पर मालिक के निजरूप को दिखाया जा रहा है।

गुरु सबसे बड़ा है। गुरु से बड़ा कोई भी नहीं है। यदि तुम गुरु की शरणागत हो जाओगे तो वह तुम्हारे अधिकार में आ जायेगा। सत्संग में गुरु का ऐसा रूप दिखाऊँगा कि आप भी वैसे ही बन जाओगे।

सत रज तम के हद से बाहर,गुरु मूरत दरसाऊँ।

सत हैं विष्णु, रज है ब्रह्मा और तम है शिव। शिव का आकार नहीं होता। शिव वास्तव में फकीर है ।

वह आशुतोष है। जो शिव की अर्थात् फकीर की भक्ति करता है उसको कोई खतरा नहीं होता। देवी-देवता के अनुष्ठान में जरा सी भूल हो जाने पर सत्यानाश हो जाता है। सन्तमत सनातन धर्म की आखिरी कड़ी है। गुरुमत पहले भी था। गुरुमत में यदि आप गुरु को मान रहे हैं और आपसे कहीं भूल हो गई तो गुरु माफ कर देता है। लेकिन ऐसा सद्गुरु जो दया का रूप है, उसके साथ प्यार करने से वह आपको सीधा रास्ता दिखाता है। गुरु तो दयाल है आपकी गलतियों को माफ करता जायेगा।

एक घड़ी, आधी घड़ी, आधी से पुनि आध,
कबीर संगत साधु की, कटें कोटि अपराध।

साधु दयाल है। साधु के पास अर्थात् गुरु के पास जब कुछ मिनटों के लिए बैठोगे तो उसकी दया आप पर बहेगी और आपको ऊपर ले जायेगी। उस दयाल को न कभी पूजा की जरूरत है, न आरती जरूरत है। वह कभी रूठता नहीं है। उससे कोई रिश्ता पैदा करो। उसको तुम परमतत्त्व मानकर के जो कुछ उससे माँगोगे वह तुम्हें देगा लेकिन उसके साथ कोई रिश्ता पैदा करो। उसे पिता मानो, भाई मानो, मित्र मानो अरे कुछ नहीं मानते तो उससे दुश्मनी ही कर लो। तुम उससे रूठ जाओ। वह तुम्हें मनाने आ जायेगा। वह तो दयाल है। उसके नजदीक रहना तो बहुत लाभदायक है।

निर्गुण सगुण देह नहीं जाके, अद्भुत भेद जताऊँ।

दाता दयाल कहते हैं कि मैं आपको एक भेद बताता हूं। वह निर्गुण और सगुण दोनों ही है। उसकी निर्गुण देह भी है और सगुण देह भी है। तुम उससे प्यार करो।

तुम यह मत पूछो कि वह निर्गुण है या सगुण है। अरे तुम प्यार में सौदेबाजी करते हो। जैसे शादी में कहते हैं कि कितना दहेज़ दोगे ? यह शरीर सगुण है। लेकिन इस शरीर के पीछे मन है। वह मन इसकी पुष्टि करता है। आज डाक्टर मानते हैं कि 95% बीमारी मन के कारण होती है। यदि आपका मन मजबूत है तो आपके सारे रोग समाप्त हो जायेंगे। इस प्रकार सगुण शरीर को पुष्ट करने वाला निर्गुण मन है। शरीर के रूप के मुकाबले में मन का रूप निर्गुण है लेकिन मन के पीछे आत्मा है। जब आप प्रकाश पर ध्यान लगाते हैं और प्रकाश के प्रकट होने पर आप जो भी इच्छा करेंगे वह पूरी हो जायेगी। यह मेरा अनुभव है। मैं एक लेक्चरर होते हुए भी 36 बार अमेरिका गया हूं। आज तक किराये का मन्दिर से पैसा नहीं लिया है। अब तो मैं इच्छा करता ही नहीं हूं। अब तो सारे काम अपने आप हो जाते हैं।

आत्मा सूक्ष्म है। मन के पीछे आत्मा की ताकत है। आत्मा मन से ज्यादा सूक्ष्म है। इसलिए मन तो हुआ सगुण रूप और आत्मा हुई निर्गुण रूप लेकिन आत्मा के पीछे पुरत है। सतलोक के अन्दर सत्पुरुष प्रकाशमय होता है। तुम भी प्रकाशमय शरीर में रहते हो। सतलोक के अन्दर पहुँचने से अमर हो जाते हैं। सतलोक सत्पुरुष का आत्मिक स्थूल शरीर है। सत्पुरुष के आगे अलख पुरुष है। इसके अन्दर प्रकाश कम और शब्द ज्यादा है। यह अलख पुरुष का आत्मिक सूक्ष्म रूप है। अलख पुरुष के आगे अगम पुरुष है। जहाँ शब्द ही शब्द है। यह मालिक का कारण शरीर है। लेकिन मालिक इससे परे है। यह सभी उसके रूप हैं।

हाड मांस नाड़ी न ही जाके, ताके रूप न नाऊँ।

हाड़, मांस और नाड़ी को चलाने वाला आपका मन सब बीमारियों को दूर कर सकता है। लेकिन उस मालिक के हाड़, माँस नाड़ी, नहीं है। यह उसका विचित्र भेद है। उस मालिक का न नाम है न रूप है लेकिन सभी नाम उसके हैं और सभी रूप उसके हैं। आपका अविनाशी रूप मालिक का रूप है। उसको पकड़ लेने से आपका सारा दुःख दूर हो जायेगा। आपका लोक भी बनेगा और परलोक भी बनेगा।

रूप, अरूप, स्वरूप अनूपा, निराकार ठहराऊँ।

मैंने आपको बताया कि रूप सगुण है, अरूप निर्गुण है। स्वरूप उससे भी परे केन्द्र है। मैं उस मालिक को निराकार ठहराऊंगा क्योंकि जगत् साकार है। अगर वह मालिक से निकला है तो मालिक को निराकार कैसे कह दूं ? इसलिए जब सतगुरु से प्यार करो और वह अमेरिका चला जाये तो उसे निराकार मान लो। जब आ जायेगा तो साकार हो जायेगा। हालाँकि यह मानना बहुत मुश्किल है क्योंकि उसका रूप भी है, अरूप भी है और स्वरूप भी है। अगर रूप है तो मैं कैसे कहूं कि वह साकार नहीं है ? अगर अरूप है तो मैं कैसे कहूं कि वह निराकार नहीं है ? अरे वह जो कुछ है उसे सिर्फ नमस्कार ही करो।

राधास्वामी चरण-शरण बलिहारी. पल-२ गुरु गुन गाऊँ।

गुरु गुन क्या है ? गुरु गुन वह अविनाशी अवस्था है जिस पर पहुँचने के बाद शरीर मन आत्मा एक हो जाय। एकत्व हो जाय। हर एक के अन्दर वह मौजूद है। इस बात को याद रखकर कि सभी के अन्दर वह मौजूद है और सद्गुरु के वाक्य पर अमल करना ही गुरु गुन गाना है। सद्गुरु

तो तुम्हारे प्रेम के आधीन है। गुरु ही सब कुछ है। बाकी रिश्तेदारों से प्रेम रखो। गुरु के साथ प्रेम रखने से आपके सभी काम बन जायेंगे।

जो सद्गुरु से प्यार करेगा, वह किसी की निन्दा की परवाह नहीं करेगा। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको सद्भावना देता हूँ।

सबको राधास्वामी !

आपका फकीरमय

मानव।

★ आवश्यक सूचना ★

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 13 व 14 अप्रैल 1988 को मानवता मन्दिर होशियारपुर में वैशाखी का सन्त सम्मेलन आयोजित होगा। इस अवसर पर सन्त मत व अन्य धर्मों के आचार्य सत्संग देंगे। बाहर से आने वाले सत्संगियों और आचार्यगण के भोजन व ठहरने की व्यवस्था फकीर लायब्रेरी चेरिटेबल ट्रस्ट, मानवता मन्दिर की ओर से की जायेगी। सभी आने वाले सत्संगियों को कम से कम 15 दिन पहले ही अपने पहुँचने और प्रस्थान की तिथि और समय की सूचना जनरल सेक्रेटरी, मानवता मन्दिर, होशियारपुर को दे देनी चाहिए।

एस. एल सेठी

जनरल सेक्रेटरी

मासिक सन्देश

परम सन्त हजूर मानव दयाल

डा० ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज

मेरे परम प्रिय सत्संगियो,

राधास्वामी, परम दयाल जी सहाई !

आपसे बातचीत करने के लिए मासिक सन्देश एक बहुत ही सुन्दर माध्यम है। ऐसा लगता है कि आप सब मेरे अंश मेरे सामने हैं। 20 दिसम्बर को हर महीने की भाँति मानवता मन्दिर में एक विशाल मासिक सत्संग सम्पन्न हुआ। इसमें भी सत्संगी दूर-२ से आकर सम्मिलित हुए। 19 दिसम्बर को ही सत्संगी काफी संख्या में बाहर से पहुँच गये थे इसलिए 19 सायंकाल को भी एक छोटा सा सत्संग हो गया। 20 दिसम्बर को प्रातःकाल साढ़े छः बजे करीब 8-10 सत्संगी समाधि ध्यान के लिए भी मेरे पास आये। बटाला के सत्संगियों ने इस बार भी हमेशा की तरह प्रातः-काल मन्दिर में ठहरे हुए सभी सत्संगियों को नाश्ता कराया। सत्संग पहले की भाँति सफल रहा। 20 दिसम्बर को ही मुझे अमेरिका से टेलीफोन आया कि मुझे वर्जीनिया बीच के मकान के सम्बन्ध में आवश्यक कार्यवाही के लिए जाना होगा। इसलिए मुझे अचानक ही 23 दिसम्बर प्रातःकाल

3 बजकर 15 मिनट पर ब्रिटिश एयरवेज से अमेरिका के लिए रवाना होना पड़ा। हालाँकि इस दौरे पर किसी विशेष सत्संग का आयोजन नहीं हुआ, फिर भी अमेरिका में एक दो स्थानों पर और वापस लौटते समय दो दिन इंग्लैंड में सत्संग हो ही गये।

मैं इस संक्षिप्त और अचानक विदेशी दौरे के सम्बन्ध में बहुत थोड़े शब्दों में आपको सूचित करूंगा। 23 दिसम्बर को ही मैं 3 बजे सायंकाल न्यूयार्क पहुँच गया। उसी रात को मैं श्री जाहन कर्टन और उसकी पत्नी श्रीमती सूजन कर्टन के साथ उनके निवास स्थान पर पहुँच गया। न्यूयार्क से मेरीलैण्ड तक मुझे आचार्या श्रीमती थैल्माकार्टर और उन का सुपुत्र फ्रैड कार्टर अपनी कार में लाये थे। फ्रैड, जो कुछ ही वर्ष पहले किशोरावस्था में मेरे साथ खेला करता था, आज एक प्रौढ़ जिम्मेदार व्यक्ति हो गया है। सारे रास्ते में उसी ने कार चलाई। दूसरे दिन प्रातःकाल नाश्ते के पश्चात् कुछ सत्संगी मिलने के लिए आये जिसके फलस्वरूप 24 दिसम्बर को सायंकाल एक छोटा सा सत्संग आयोजित हो गया। 25 दिसम्बर को प्रातःकाल 11 बजे वाशिंगटन से नौर्थ वैस्टन एयरलाइन से रवाना होकर मैं 1 बजे दोपहर को ग्रीन बे विस्कौन्सिन में पहुँच गया, जहाँ पर श्री अजीत कुमार और उनके सुपुत्र श्री अजय कुमार मेरे स्वागत के लिए मौजूद थे।

क्योंकि पिछले अमेरिका के दौरे पर श्री अजय के विवाह के समारोह में व्यस्त होने के कारण श्री अजीत कुमार परिवार को अलग से समय नहीं मिल सका था, इसलिए उनके अनुरोध पर मुझे 29 दिसम्बर तक उनके निवास स्थान पर रहना पड़ा। श्री अजीत कुमार के तीनों सुपुत्र और

उनकी सुपुत्री रेणु अपने-२ काम से छुट्टी लेकर मेरे लिए ग्रीन बे पहुँच चुके थे। पहले की भाँति श्री अजीत कुमार के साथ मेरा प्रातःकाल सैर का सत्संग होता रहा क्योंकि श्री अजीत कुमार ने मेरे लिए अपने दफ्तर से छुट्टियाँ ले ली थीं। दिनभर बच्चों के साथ और श्रीमती रमेश के साथ धार्मिक चर्चा होती रही।

इसी दौरान में श्री रवि और उनकी पत्नी श्रीमती कानन तथा डा. अमरनानी और उनका परिवार मेरे सम्पर्क में रहा। मैंने डा. नारायण अमरनानी के सम्बन्ध में पहले भी आपको सूचना दी थी। यह और इनकी अमेरिकन पत्नी एक आदर्श मानव परिवार को चला रहे हैं। इनके तीन पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं, जो अभी बहुत छोटे हैं किन्तु ये सभी बच्चे प्रेम-मय हैं। इनके घर में जाकर मुझे मनुस्मृति का वह श्लोक याद आ जाता है जो इस प्रकार है :—

यावन् न विन्दते जायां,
तावद् अर्धो भवेत् पुमान्।
यन् न बालैः परिवृतं,
श्मशान इव तद् गृहम्।

अर्थात् जब तक पुरुष पत्नी को ग्रहण नहीं करता तब तक वह अधूरा रहता है। जिस घर में बच्चे खेलते हुए दिखाई नहीं देते वह घर श्मशान के समान है। मैं जानता हूं कि आज के युग में जहाँ परिवार नियोजन को आवश्यक समझा जाता है, ऐसे विचार को मान्यता नहीं दी जायेगी। भारत में तो "छोटा परिवार सुखी परिवार" का नियम लागू है किन्तु अमेरिका में जनसंख्या की समस्या नहीं है।

नारायण अमरनानी एक बहुत ही सफल डाक्टर हैं और

उनकी पत्नी श्रीमती सिण्डी एक आदर्श गृहिणी है । इनके लिए परिवार नियोजन की आवश्यकता इसी में है कि तीन पुत्र और दो पुत्रियाँ इनके घर को सुशोभित करें। मैं एक बार फिर आपको बता देना चाहता हूं कि श्रीमती सिण्डी अमेरिकन होते हुए भी एक आदर्श भारतीय पत्नी का नमूना है। वह घर में भारतीय भोजन बनाती है और जब श्री अमरनानी के पिता भारत से आकर महीनों तक ग्रीन बे में ठहरते हैं तो दोनों पति-पत्नी उनका आदर करते हैं और उनकी सेवा करते हैं।

29 दिसम्बर दोपहर को 1 बजे मुझे ग्रीनबे से डीट्रायट के लिए और डीट्रायट से वाशिंगटन के लिए रवाना होना था। श्री अजीत कुमार और श्री अजय मुझे हवाई अड्डे पर छोड़ने के लिए आये। हमारा हवाई जहाज एक घण्टा लेट हो गया क्योंकि जिस हवाई अड्डे से उसे ग्रीन बे आना था वहाँ पर बहुत बर्फ पड़ गई थी । जब मैं डीट्रायट पहुँचा तो जिस उड़ान से मुझे वहाँ से वाशिंगटन जाना था वह पहले ही रवाना हो चुकी थी। जब मैं उस गेट पर पहुंचा जहाँ से वाशिंगटन के लिए हवाई जहाज जाते थे तो मुझे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि सैकड़ों यात्री वाशिंगटन जाने के लिए पंक्तियों में खड़े थे। उसका कारण यह था कि अमेरिका में बहुत स्थानों पर हिमपात होने के कारण बहुत से हवाई जहाज लेट हो गये थे इसलिए बहुत से यात्रियों को डीट्रायट में ही होटलों में ठहरने के टिकट दिये जा रहे थे । जब मैं अपनी बारी से काउण्टर पर पहुँचा तो मुझे काउण्टर पर बैठी हुई महिला ने कहा "डा. शर्मा ! आपका जहाज लेट हो गया इसलिए आपको मैं अगली दो वाशिंगटन की उड़ानों में इन्तजार की सूची पर रख देती हूं। पहली उड़ान की सूची बहुत लम्बी है। सम्भवतया आप दूसरी उड़ान से वाशिंगटन

जा सकेंगे।" जब उसने कम्प्यूटर चलाया तो उसने आश्चर्य चकित होकर कहा "डा. शर्मा! अजीब बात है। अगली उड़ान की लम्बी सूची में आपका नाम पहले स्थान पर पहले ही मौजूद है। मैं स्वयं अभी तक यह नहीं समझ सका कि यह कैसे हुआ? मैंने किसी को कहा नहीं था और न मुझे वहाँ कोई जानता था। मैं इसे केवल मालिक की मौज ही कह सकता हूं। मैं रात्रि के 9 बजे वाशिंगटन पहुँचा जहाँ पर जाहन कर्टन मुझे लेने के लिए आये हुए थे।

30 दिसम्बर प्रात:काल हमें वर्जीनिया जाना पड़ा, जहाँ पर मुझे वर्जीनिया बीच स्थित उस मकान से सम्बन्धित कार्यवाही करनी थी जिसमें परम दयाल जी महाराज कई बार आकर ठहरे थे। इस कार्यवाही में ऐसी व्यवस्था हो गई है कि हम उस पवित्र मकान में कभीन्२ जा भी सकते हैं। हालाँकि हमने उसे इसलिए बेच दिया है क्योंकि किरायेदार मकान की रक्षा ठीक तरह से नहीं करते। परन्तु मकान का खरीददार भाग्य माता जी का छोटा भाई ही है इसलिए मकान के दरवाजे हमारे लिए हमेशा खुले रहेंगे। परम पूज्य परम दयाल जी की स्मृति उस मकान में जाकर ताजा होती रहेगी।

उसी दिन रात्रि 9 बजे तक हम श्री जॉहन कर्टन के घर पर मेरीलैण्ड में वापिस पहुँच गये थे। 31 दिसम्बर सायंकाल 5 बजे मुझे 4 दिन के लिए अपने बड़े सुपुत्र डा. अरुण जेतली और पुत्रवधू श्रीमती मञ्जु जेतली के पास क्लीवलैंड जाना था। मेरा यह दिन अत्यन्त व्यस्त रहा। प्रात:काल मैं श्रीमती सूजन कर्टन, श्रीमती आचार्या थैल्मा कार्टर और जॉहन कर्टन के सुपुत्र मंगलम के साथ भारतीय दूतावास में गये। वहाँ मुझे कुछ सरकारी कार्य था जिसके

लिए पुन: 3 बजे सायंकाल वापिस जाना पड़ा। इसी दौरान में हम वाशिंगटन शहर में गये और वहाँ श्री लक्ष्मी चन्द गुप्ता के World-Wide Travel दफ्तर में गये। श्री गुप्ता और उनकी पत्नी श्रीमती ऊषा गुप्ता इस कम्पनी को सुचारु रूप से चला रहे हैं और हमेशा हमें यात्रा में सहायता देते रहते हैं। इनकी मानवता धर्म के प्रति बहुत श्रद्धा है।

साढ़े ग्यारह बजे के करीब जब हमारी श्री लक्ष्मी चन्द जी से बातचीत समाप्त हुई तो हमने श्री जॉहन कर्टन को उनके दफ्तर में टेलीफोन किया। जॉहन ने यह सलाह दी कि हम सब मिलकर वाशिंगटन में स्थित जॉर्ज टाउन की एक सुन्दर मार्किट में दोपहर का भोजन करें। इसी कारण हम 12 बजे एक सुन्दर विशाल Arcked मंडी), में पहुंच गये। यह तीन मंजिली हर प्रकार की दुकानों की विशाल मंडी है। वह बहुत विस्तृत है। तीन मंजिलों पर जाने के लिए काँच की लिफ्टें और बिजली से चलने वाली सीढ़ियाँ लगी हुई हैं। हरएक मंजिल पर सजावट थी और क्रिसमस तथा नववर्ष के उत्सवों के कारण किस्म-२ के बल्ब इत्यादि लगे हुए थे। ऐसा लगता था कि हम किसी दिव्यलोक में पहुँच गये हों। कुछ समय के बाद श्री जॉहन कर्टन निश्चित स्थान पर आ कर हमें मिले। उसी के निकट ही एक शाकाहारी होटल था जिसमें हमने बैठकर पीज्ज़ा (Pizza) का आर्डर दिया। पीज्जा एक इटैलियन भोजन है जिसमें एक बहुत बड़ी तन्दूरी जैसी रोटी के ऊपर पीला पनीर, शिमला मिर्च, खुम्बी आदि और टमाटर सॉस लगी रहती है। इसके ऊपर भी नमकीन सूखा पनीर और यदि कोई चाहे तो लाल मिर्च छिड़क दी जाती है। मैं इसे भारतीय व्यंजनों में कल्लम्मा कह सकता हूं। या यूँ कहिये कि एक तले हुए विशाल मैदे की गोल

रोटी के ऊपर-२ लिखी गई वस्तुएँ लगा दी जायें। वास्तव में यह एक बहुत अच्छा स्वादिष्ट व्यंजन है और पूरक भी है। आजकल देहली में कुछ होटलों पर पीज्ज़ा बनाया जाता है। यह व्यंजन अमेरिका में और यूरोप में सर्वप्रिय है। मैं समझता हूं कि अगर कोई भारतीय भोजन विशेषज्ञ यूरोप और अमेरिका में पराँठा की प्रथा चला दे तो यह भारतीय व्यंजन सर्वत्र सर्वप्रिय हो सकता है।

आप कहंगे कि जिस मासिक सन्देश में हम उच्चकोटि की आध्यात्मिकता की बात करते हैं वहाँ व्यंजनों के जिक्र की क्या आवश्यकता है। मेरे प्यारे सत्संगियो! मैं आपको अपने सभी अनुभव बता रहा हूं और आपको यथार्थ बातें कह रहा हूं। विदेश में शाकाहारी भोजन का प्राप्त होना एक वरदान है। यदि आपको ऊपर दी गई व्याख्या रोचक न लगी हो तो आप मुझे क्षमा कर दें। ठीक 2 बजे दोपहर को हम सब उस होटल से बाहर निकले। श्रीमती जॉहन कर्टन, आचार्या वैल्मा कार्टर और मंगलम एक कार से मेरीलैंड की तरफ रवाना हो गये। मैं जॉहन कर्टन के साथ उसकी कार में भारतीय दूतावास में पहुँचा क्योंकि अभी दफ्तर के खुलने में करीब आधा घण्टा था। हम स्वागत कक्ष में प्रतीक्षा करने लगे। थोड़ी देर में वहाँ पर एक कर्मचारी आया। मैंने उससे पूछा कि भारत के नये राजदूत श्री पी. के. कौल कहाँ हैं? उसने हमें सूचना दी कि वह मुख्य दूतावास में अभी-२ गये हैं। जहाँ हम बैठे थे वह दफ्तर मुख्य दूतावास से करीब एक मील दूर है। उसने हमें यह भी बताया कि वह अभी-२ इसी दफ्तर में किसी उत्सव के लिए आये थे और 15 मिनट पहले ही मुख्य दूतावास को चले गये थे। अभी तक जितने भारत के राजदूत 1962 से लेकर 1986

तक अमेरिका में गये हैं सभी को परम दयाल जी महाराज के मानवता धर्म से मेरे कारण परिचय मिलता रहा है। इसलिए मैंने सोचा कि नये राजदूत को भी मानवता धर्म का अंग्रेजी का साहित्य दिया जाये तो उचित होगा।

मैंने तुरन्त मुख्य दूतावास में श्री पी. के. कौल के मुख्य निजीसचिव से बातचीत की और बताया कि मैं 4 जनवरी 1988 को क्लीवलैंड से लौटकर वाशिंगटन रहूंगा। उसने श्री पी. के. कौल से बातचीत करके मुझे बताया कि 4 जनवरी को प्रात:काल 11 बजे उन्होंने मिलने का समय दिया है। मेरे लिए यह समय बिलकुल उपयुक्त था क्योंकि मुझे उसी दिन क्लीवलैंड से साढ़े नौ बजे प्रात:काल वाशिंगटन पहुँचना था। मैं साढ़े पाँच के करीब वाशिंगटन से रवाना होकर Detroit में हवाई जहाज बदल कर 9 बजे रात्रि के करीब क्लीवलैंड पहुँचा। डा. अरुण जेतली, श्रीमती मञ्जु जेतली और कुमार पुरु जेतली (डा. अरुण जेतली का सुपुत्र) अपनी कार में मुझे लेने के लिए हवाई अड्डे पर मौजूद थे। उन्होंने मेरा सामान डिग्गी में रखा और हम सब घर जाने की बजाय डा. गोयल के घर पर पहुँचे। उसका कारण यह था कि डा. गोयल ने हम सब को अपने घर में आयोजित नववर्ष के उत्सव पर बुलाया था। वहाँ पर बहुत से भारतीय परिवार मौजूद थे। इस अवसर पर डा, गोयल ने मुझे उस जनसमूह को सम्बोधित करने के लिए कहा। मैंने परामर्श दिया कि सभी भारतीयों को जो विदेशों में बस गये हैं, चाहिए कि वे पश्चिमीय संस्कृति के साथ-२ भारतीय परम्पराओं को जीवित रखें ताकि विशेषकर अमेरिका में पूर्वी और पश्चिमी संस्कृतियों की मिलौनी हो जाये और सच्ची मानवता को अपनाया जाये।

दूसरे दिन मेरा छोटा सुपुत्र डा. प्रियदर्शी जेतली जिसे हम दर्शी कहते हैं क्लोवलैंड आ गया। इस प्रकार पहली जनवरी से लेकर 4 जनवरी प्रातः तक हम पारिवारिक जीवन में व्यस्त रहे। दर्शी और अरुण सदैव बौद्धिक और आध्यात्मिक चर्चा किया करते हैं इसलिए यह पारिवारिक बातचीत भी सत्संग में परिवर्तित हो गई। दर्शी मेरे लिए अपना वह शोधग्रन्थ लाया जिसके आधार पर उसे आचार्य व पी.एच.डी. की उपाधि मिली है। अरुण ने जब उस ग्रन्थ का अवलोकन किया तो साथ-२ कह उठा "मैं यह नहीं जानता था कि दर्शी इतना विद्वान है। उसके विचार, उसकी भाषा और उसकी शैली इतनी उत्कृष्ट है कि सम्भवतया उसका दृष्टिकोण पश्चिमीय दर्शन को एक नया मोड़ दे सकता है।" जब मैंने उस ग्रन्थ का अवलोकन किया तो मुझे यह जानकर तसल्ली हुई कि अरुण का दृष्टिकोण ठीक था।

दर्शी के इस शोधग्रंथ में विशेष कर यूनानी उत्कृष्ट दार्शनिक अफलातून (Plato) पर एक नया प्रकाश डाला है। अफलातून पश्चिमीय दर्शन के विख्यात दार्शनिक सुकरात का शिष्य था। उसके दर्शन में उपनिषदों के दर्शन की झलक है और पुनर्जन्म का सिद्धान्त भी मौजूद है। अफलातून आज से 23 सौ वर्ष पूर्व पैदा हुआ था। कहते हैं कि सारा पश्चिमीय दर्शन अफलातून के दर्शन पर आधारित है। यदि यह सत्य है तो मेरा यह कहना एक दृढ़ सत्य है कि अफलातून और सुकरात की विचारधारा उपनिषदों पर आधारित है। प्रसंगवश मैं आपको यह बता देना चाहता हूं कि सुकरात का शिष्य अफलातून था। अफलातून का शिष्य अरस्तु था। जिसने 'सिकन्दर महान्' को शिक्षा दी थी। वास्तव में ये तीनों सन्त ही थे। कहते हैं अफलातून ने ईसा की दूसरी शताब्दी में प्लोटाइनस नाम के दार्शनिक के

रूप में पुनः जन्म लिया। इस प्लोटाइनस ने पश्चिम के अन्दर एक नई परम्परा की नींव डाली, जिसे नव-अफलातून वाद (New-Platonism) कहा जाता है। यह दृष्टिकोण पूर्ण रूप से राधास्वामी मत से और विशेषकर परम दयाल जी महाराज के दर्शन से पूरा मेल रखता है।

मैं इस दृष्टिकोण को कभी खोलकर सरल भाषा में सत्संगियों के लिए लिखूंगा। यहाँ पर यह चर्चा इसलिए की गई है कि अरुण और दर्शी दर्शन में और आध्यात्मिकता में स्वयं ही रूचि ले रहे हैं। हमने कभी भी इन बच्चों पर अपने विचारों को थोपने की कोशिश नहीं की। किन्तु क्योंकि ये दोनों बच्चे विदेश में भी हमारे साथ रहे और परम दयाल जी महाराज के सत्संगों को सुनते रहे एवं उनसे आशीर्वाद लेते रहे, इसलिए इनके सन्तमत के संस्कार बहुत प्रभावशाली हैं। संस्कार और अधिकार ही सत्संगी को आध्यात्मिकता में ऊपर उठा सकता है।

इसी सम्बन्ध में मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि अरुण के सुपुत्र पुरु के संस्कार भी जन्म से पूर्व और जन्म के पश्चात् सन्तमत से ओतप्रोत हैं। जब यह बालक केवल डेढ़ वर्ष का था, अपने घर में मेज पर पड़ी हुई सभी वस्तुओं को फेंक देता था किन्तु एक विचित्र बात यह भी कि वह परम दयाल जी के चित्र को न केवल सुरक्षित रखता था बल्कि उसको ले जाकर कमरे में बैठकर उससे बातें करता रहता था। अब वह तीन वर्ष का हो चुका है और स्कूल भी जाता है। वह मानव मन्दिर पुस्तक में चित्र देखता रहता है। प्रायः वह मेरा चित्र पुस्तक से फाड़कर अपने खाने वाले डब्बे में ले जाता है और मित्रों को दे देता है। मैं सच्चे दिल से चाहता हूं कि इस होनहार बालक के ये संस्कार बने रहें। यह सच्चा मानववादी बना रहे।

4 जनवरी को मैं क्लीवलैण्ड से वाशिंगटन लौट आया। भारतीय राजदूत श्री पी. के. कौल से करीब आधे घण्टे तक मेरा वार्तालाप हुआ। मैंने उन्हें मानवता धर्म से अवगत कराया, जिससे वह प्रभावित हुए क्योंकि पश्चिम में भारतीय दर्शन के सम्बन्ध में भ्रान्तियाँ तभी दूर हो सकती हैं जब दाता दयाल जी और परम दयाल जी की सच्ची मानवता विश्व के कोने-२ में पहुँच जाये। उसी दिन सायंकाल 7 बजे के करीब मैं वाशिंगटन से न्यूयार्क पहुंच गया रात्रि के 10 बजे तक मैं ग्लैनरौक न्यूजर्सी में श्री सुदर्शन लाल के घर पर ठहरा। इसी दौरान में एक पारिवारिक सत्संग हुआ जिसमें न्यूयार्क के डा. एम. के. शर्मा और उनकी पत्नी भी सम्मिलित हुए। मैं रात्रि के विश्राम के लिए इन दोनों के साथ न्यूयार्क में उनके घर गया। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि डा. शर्मा का परिवार सन्तमत में विशेष रुचि रखता है और सच्चाई का इच्छुक है। भविष्य में इनके घर पर सत्संग का आयोजन भी किया जायेगा।

5 जनवरी को मैं सायंकाल न्यूयार्क से रवाना होकर 6 प्रातः को मानचैस्टर इंग्लैंड पहुँचा। डा. के. एम. खुराना मुझे घर ले जाने के लिए मानचैस्टर हवाई अड्डे पर मौजूद थे। उसी दिन सायंकाल 5 बजे बर्मिंघम के श्री किशोर गुप्ता मानचैस्टर आकर मुझे अपने घर बर्मिंघम ले गये। नामालूम बर्मिंघम के सत्संगियों को कैसे सूचना मिल गई थी। श्री गुप्ता के घर पर 20 के करीब सत्संगी पहुंच ही गये। इसलिए मुझे एक पारिवारिक सत्संग देना पड़ा। दूसरे दिन मैं श्री बख्शी सिंह तथा उनकी पत्नी श्रीमती सावित्री, श्री लक्ष्मी नारायण तथा उनकी पत्नी श्रीमती शशि के अलावा श्री जगदीश गुप्ता के घर पर जाकर उनसे मिला।

8 जनवरी को प्रातःकाल मानचैस्टर से रवाना होकर और लन्दन में हवाई जहाज बदलकर मैं ब्रिटिश एयरवेज से 9 जनवरी रात के साढ़े ग्यारह बजे इन्दिरा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर नई दिल्ली पहुंचा। ज्यों ही मैं पासपोर्ट की जाँच के लिए पुलिस ऑफीसर के पास पहुंचा तो मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि देहली के श्री सुदर्शन और श्रीमती कृष्णा छुरा की सुपुत्री वहाँ मेरे स्वागत के लिए मौजूद थीं। यह योग्य माता-पिता की योग्य बेटी कुमारी वीना छुरा हवाई अड्डे पर काम करती है। कस्टम के बाद बाहर आने पर श्री के. पी. वर्मा का परिवार और बहुत से सत्संगी मुझे मिले। उस रात्रि को हम सब फरीदाबाद में रुके। 11 जनवरी को मैं शाने-पंजाब से जालन्धर और जालन्धर से 4 बजे सायंकाल होशियारपुर पहुंचा। इस मासिक सन्देश में यहाँ तक सूचना पर्याप्त रहेगी।

पिछले मासिक सन्देश में मैंने आपको वचन दिया था कि इस महीने में मानसिक तप की चर्चा करूंगा। भगवद्गीता के 17वें अध्याय के 16वें श्लोक में भगवान कृष्ण ने मानसिक तप की चर्चा करते हुए कहा है :—

मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः ।
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ॥

अर्थात् मन की प्रसन्नता, गम्भीर और शान्त स्वभाव, मौन अन्तःकरण के भावों की पवित्रता और मन का नियन्त्रण सभी मन सम्बन्धी तप के लक्षण हैं। मन की प्रसन्नता का अर्थ यह है कि साधक हर हाल में आशावादी रहता हुआ प्रसन्नचित्त रहे। इसके विपरीत जो व्यक्ति निराशावादी रहता है और हर काम में दोष ही देखता रहता है वह न कभी जीवन में सफलता पा सकता है न दूसरों को सुख दे

सकता है। प्रसन्नचित्त और आशावादी व्यक्ति सदैव कठिन से कठिन परिस्थिति में भी सफल रहता है। वह न ही केवल स्वयं दुःख और शोक से निवृत्त रहता है बल्कि दूसरों को भी सुख पहुँचाता है। अंग्रेजी भाषा के विख्यात लेखक R.L. Stevenson ने लिखा है "एक प्रसन्नचित्त व्यक्ति का पाना सैकड़ों रुपयों से अधिक मूल्यवान है। जब ऐसा व्यक्ति बैठक में घुसता है तो ऐसा लगता है कि एक और दीपक जल गया हो।" यह तो प्रसन्नचित्त व्यक्ति की सांसारिक उपयोगिता है। सन्तमत एवं राधास्वामी मत की दृष्टि से और उपनिषत्काल के ऋषियों की दृष्टि से प्रसन्नता ही आत्मा का लक्षण है। शरीर का स्वभाव जाग्रत अवस्था में सुख-दुःख का ठोस अनुभव करना है। मन का स्वभाव जाग्रत और स्वप्न में चेतना एवं ज्ञान का अनुभव करना है। आत्मा का स्वभाव जाग्रत और सुषुप्ति में आनन्द का अनुभव करना है।

शरीर, मन और आत्मा ही क्रमशः सत्, चित् और आनन्द पर आधारित है। लोग सच्चिदानन्द रूप ईश्वर को बाहर ढूंढ़ने में लगे हुए हैं। सत्य तो यह है कि हरएक मनुष्य के अन्दर सच्चिदानन्द ईश्वर हर समय मौजूद रहता है। हमारे अन्तस् में ही आनन्द की खान है। सारे ब्रह्मांड में भी ब्रह्मा, विष्णु, शिव अर्थात् विराट् अव्याकृत और हिरण्यगर्भ के रूप में सच्चिदानन्द ईश्वर उपस्थित है। शरीर का आधार मन और मन का आधार आत्मा है। दूसरे शब्दों में सत् चित् और चित् आनन्द पर आधारित है। इसलिए मनुष्य का असली आधार ब्रह्मांड के असली आधार की भाँति आनन्दमय है।

इसी कारण ऋषियों ने अनुभव के बाद बताया कि

इस जगत् में जो कुछ जड़-चेतन वस्तुएँ एवं प्राणी हैं, सभी ईश्वर से ओतप्रोत होने के कारण आनन्दमय हैं। जो मनुष्य इस वास्तविकता को पहचान लेता है और सदा-सर्वदा आनन्द में रहने का प्रयास करता है वह आत्मा का अनुभव जल्दी कर सकता है। हम अगले मासिक सन्देश में जीवन और विश्व के इसी आनन्दमय स्वरूप और लक्ष्य की चर्चा करते हुए मानसिक तप में सन्तमत की दृष्टि से प्रसन्नता की व्याख्या करेंगे। तब तक के लिए आपसे विदा चाहता हूं और इस मासिक सन्देश को यहाँ समाप्त करते हुए आप सबको इस महीने की शुभकामना देता हूं।

मुझे पूरी आशा है कि आप इस सन्देश से प्रेरित हो कर हमेशा आशावादी और आनन्द में रहने की चेष्टा करते हुए अपने पारिवारिक जीवन को, सामाजिक जीवन को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन को सुखद बनाने में सफल रहेंगे।

सप्रेम राधास्वामी !

आपका फकीरमय
मानव

★★★

परमसन्त हिज होलीनेस हजूर मानव दयाल डा. ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज का मार्च 1988 का टूर-प्रोग्राम

25-3-1988—8 बजे प्रात: होशियारपुर से जयपुर के लिए प्रस्थान।

27-3-1988—सायंकाल
28-3-1988—प्रात:काल) जयपुर में सत्संग।

श्री अर्जुन लाल छापरवाल,
बंगला न. 5-ए जे. डी. ए. कॉलोनी,
लाल कोठी, जयपुर फोन : 68721

अथवा

श्री महाराज कृष्ण शर्मा
16-सी (ए), मोती मार्ग,
बापू नगर, जयपुर.

29-3-1988—सायंकाल अजमेर में सत्संग।

श्री सुमेर सिंह राठौर
36/10 फकीर भवन, (निकट डा. वांचू)
सिविल लाइन्स, अजमेर.

30-3-1988—सायंकाल
31-3-1988—प्रात:काल) भीलवाड़ा में सत्संग।

श्री तेजेन्द्र मणि गुप्त
शास्त्री नगर, भीलवाड़ा

अथवा

श्री जे. [illegible] सर्राफ
का[illegible]र, भीलवाड़ा.

1-4-1988—सायंकाल, अलवर में सत्संग।
श्री मूल चन्द गांधी
ब्रह्मचारी चौक, अलवर

2-4-1988—अलवर से दिल्ली को प्रस्थान।

3-4-1988—प्रातःकाल, सालवान पब्लिक स्कूल,
ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई देहली
में सत्संग, 9 से 12 बजे तक।

3-4-1988—सायंकाल
4-4-1988—प्रातःकाल
सत्संग। स्थान की सूचना साललान स्कूल में कर दी जाएगी

5-4-1988—प्रातःकाल—होशियारपुर के लिए प्रस्थान।
सायंकाल—5 बजे मानवता मन्दिर
होशियारपुर में आगमन।

※ आवश्यक सूचना ※

हमें इस बात का दुःख है कि मानवता धाम में प्लाटों के अलाबमेंट जो जनवरी में होने थे, उसमें कुछ देर हो गई है। इसका कारण यह है कि जमीन के रजिस्ट्रेशन की सरकारी कार्यवाही में काफी देरी हो गई थी।

अब यह रजिस्ट्रेशन का काम फरबरी के अन्त तक समाप्त हो जायेगा और वैसाखी से पहले-२ प्लाटों का अलाटमेंट हो जायेगा।

जनरल सेक्रेटरी
मानवता मन्दिर, होशियारपुर

मेरे सद्गुरु मेरे आराध्य

अतीतकाल में दया सागर नामक एक अत्यन्त महान् सम्राट् इस धरती पर राज्य करते थे। सम्राट् की उदारता तत्त्वज्ञान, अध्यात्मानुभूति और अन्तरदृष्टि की लोक-लोकान्तरों में कोई तुलना न थी। उनकी संकल्पशक्ति इतनी प्रबल थी कि अपने महल में बैठे हुए, जबान हिलाय बगैर ही उनके सारे काम-काज स्वतः सिद्ध होते रहते थे। अपनी चतुरंगिणी सेना और शस्त्रागार को एक प्रकार से विश्राम दे रखा था।

सम्राट् दया सागर अपनी प्रजा पर अति स्नेह रखते, उन्हें अपनी सच्ची सन्तान समझते और उनके दुःख-सुख को अपना दुःख-सुख जानते थे। अपनी आध्यात्मिक मस्ती के आलम में उन्हें दीन-दुनिया की होश न रहती, पर होश आते ही अदनी प्यारी प्रजा-सन्तति का तनिक भी कष्ट देखकर तिलमिला उठते। वह अपनी भोली-भाली निरीह प्रजा के सच्चे सुख और कल्याण के लिए चिन्तित रहते थे। कभी तो वे सोचते कि अपना स्वकाज छोड़कर प्रजा-सन्तति की शिक्षा-दीक्षा के काम को स्वयं अपने हाथ में ले लें। किन्तु फिर विचार करते कि पिता तो पिता ही होता है और गुरु गुरु ही है। गुरु का दर्जा पिता नहीं ले सकता। विशेषकर जहाँ तक शिक्षा-दीक्षा के कार्य का तअल्लुक है। वह गुरु का ही है, न कि पिता का। पिता को सन्तान की अज्ञता, अल्प-ज्ञता और त्रुटियों पर कभी न कभी झुंझलाहट आ ही जाती है और क्रोध में वह जोर-जब्र का व्यवहार कर बैठता है क्रोध और जब्र नादान शिशु के कोमल हृदय और पिता की आत्मा, दोनों के हक में हानिकारक होता है जिससे दोनों की प्रगति और विकास में गतिरोध और ह्रास उत्पन्न होता है। सच्चा गुरु कभी भी शिष्य पर क्रोध नहीं करता। व उसकी उन्नति और विकास की नई-२ विधियों और युक्तिय

से काम लेता हुआ उसकी त्रुटियों, कमजोरियों की निव…
उसकी सोई हुई शक्तियों को उभारता और उ…
बना देता है। गुरु यदि कभी शिष्य पर …
तो वह क्षण भर का नाटकमात्र होता …
कल्याण के निमित्त।

गुरु कुम्हार सिष …
अन्तर हाथ स…
कुमति कौ…
जनम…

पर सहज साम्राज्य था।

सम्राट् की प्रसन्नता की सीमा न रही। उन्होंने समर्थ गुरु को तत्काल 'सन्त सद्गुरु वक्त' घोषित कर दिया और पूर्ण आस्था एवं विश्वास के साथ अपनी प्रिय प्रजा-सन्तति का सम्पूर्ण दायित्व उनके हाथों में सौंप कर स्वयं अन्तर्धान हो गये। समर्थ सन्त सद्गुरु वक्त के अनन्त अलौकिक प्रेम, वात्सल्य और ज्ञान-गंगा की शीतल धारा में सारी प्रजा के भव-दुःख क्लेश स्वतः शान्त होने लगे और उनके सत्संग के प्रताप से उनके कल्याण-निर्वाण का मार्ग प्रशस्त हो गया। इस प्रकार सम्राट् दया सागर के दर्द-भरे दिल की आशा पूरी हुई।

प्रिय पाठकगण, अब तक आप बखूबी समझ गये … कि महान् सम्राट् दया सागर और कोई नहीं, दयाल जी महाराज ही थे और आप ही उन्हीं … परम प्रिय प्रजा-सन्तति हो, जिनके कल्याण … निमित्त ही उन्होंने विदा लेने से … वन्दना, समर्थ हजूर मानव दयाल जी … लघुतम … शीतल छाँव में सुपुर्द कर … शब्दानन्द … में बुलन्द आवाज से … शिष्यों में आज … ऐसे समर्थ …

…
सत…
धन्य…
पिता गु…
…का गुरु नहीं हो…
…जा को तो शिक्षि…
…भी आचार्य-गुरुजन…
…दि गुरुजन पूर्ण…
…ात में सारी प्रजा का…
…त्तम होगा।

प्रार्थना

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
अलख अगम और अनामी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
परम सन्त का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धर पद धामी
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी
बन कर आये परम फ़कीर, हरने सब जीवों की पीर ।
परम दयालु दानी वीर, नाम दान के दानी
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
राम भी हो और कृष्ण भी तुम ।
तुम महावीर और बुद्ध गौतम ।
अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम, सब नामों में अनामी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
मानवता का किया प्रचार, निज अनुभव का दे दिया सार ।
ऐसे गुरु को बारम्बार, नमामि नमामि नमामि ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
दाता दयाल के प्यारे तुम, मानव के रखवारे तुम ।
निर्गुण और सगुण भी तुम, सब के अन्तर्यामी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग
20-3-88 को होगा ।

). 26265/74
MANDIR

MARCH 10th 1988
NWHSP—7

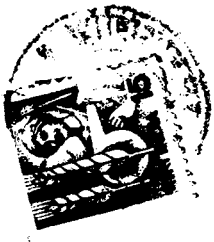

ess

)

934 Sh. Chilver Narsimula Muneer.
P.O. Tq. Banswada
Distt. Nizamabad A.P.

Phone : 2022

From :
MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR 146 001

iv Dev Rao Press, Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb).